

# प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹: 30/-

मासिक

आषाढ-श्रावण, विक्रम संवत् 2083 (जुलाई-2026)

पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित



## गुरु पूर्णिमा

जब व्यक्ति नहीं, आदर्श बने गुरु

# जुलाई 2026

## आषाढ़-श्रावण

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1 आषाढ़ कृ.प्रतिपदा	2 कृ.द्वितीया	3 कृ.तृतीया	4 कृ.चतुर्थी
5 कृ.पंचमी	6 कृ.षष्ठी	7 कृ.सप्तमी	8 कृ.अष्टमी	9 कृ.नवमी	10 कृ.दशमी /एकादशी	11 कृ.द्वादशी
12 कृ.त्रयोदशी	13 कृ.चतुर्दशी	14 आषाढ़ अमावस्या	15 आषाढ़ शु.प्रतिपदा	16 शु.द्वितीया	17 शु.तृतीया /चतुर्थी	18 शु.पंचमी
19 शु.षष्ठी	20 शु.सप्तमी	21 शु.अष्टमी	22 शु.नवमी	23 शु.नवमी	24 शु.दशमी	25 शु.एकादशी
26 शु.द्वादशी	27 शु.त्रयोदशी	28 शु.चतुर्दशी	29 आषाढ़ पूर्णिमा	30 श्रावण प्रतिपदा	31 श्रावण द्वितीया	

### जुलाई 2026 - व्रत त्यौहार

	योगिनी एकादशी जुलाई 10, 2026, शुक्रवार आषाढ़, कृष्ण एकादशी		गौण योगिनी एकादशी जुलाई 11, 2026, शनिवार आषाढ़, कृष्ण एकादशी
	जगन्नाथ रथयात्रा जुलाई 16, 2026, बृहस्पतिवार आषाढ़, शुक्ल द्वितीया		कर्क संक्रान्ति जुलाई 16, 2026, बृहस्पतिवार सूर्य का मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश
	देवशयनी एकादशी जुलाई 25, 2026, शनिवार आषाढ़, शुक्ल एकादशी		गुरु पूर्णिमा जुलाई 29, 2026, बुधवार आषाढ़, शुक्ल पूर्णिमा
	आषाढ़ पूर्णिमा जुलाई 29, 2026, बुधवार आषाढ़, शुक्ल पूर्णिमा		

## प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 07

RNI No. UPHIN/2023/84344

### संरक्षक

अनिल त्यागी

### प्रबंध निदेशक

बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

### सलाहकार मंडल

श्याम किशोर

### संपादक

डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

### कार्यकारी संपादक

डॉ. प्रियंका सिंह

### प्रबन्ध संपादक

मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक  
डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट  
प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा  
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62  
नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

### संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,

नोएडा - 201309

दूरभाष : 0120 4565851

मोबाइल : 9354133708, 9354133754

ईमेल : prernavichar@gmail.com

वेबसाइट : www.prenasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त  
विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का  
उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।  
सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा  
में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में  
मान्य होगा।

संपादक

## इस अंक में



सनातन धर्म के गौरव की  
पुनर्स्थापना का युग -07



पश्चिम बंगाल  
डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट -11



कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)  
और विकसित भारत का लक्ष्य-20



मानसून में स्वास्थ्य संबंधी  
सावधानियाँ -29

ऊर्जा संकट में स्वदेशी की जरूरत.....	05
एफसीआरए : विदेशी धन और आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ.....	09
गुरु पूर्णिमा : जब व्यक्ति नहीं , आदर्श बने गुरु.....	13
प्राचीन भारतीय महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट.....	15
पुस्तक समीक्षा : मानवीय विकास में 'सद्गुणों' का योगदान.....	17
कुशल नेतृत्व और सही रणनीति से भारत बना 'दुनिया की फार्मैसी'.....	18
युवा उपलब्धि का प्रेरक उदाहरण .....	22
बच्चों का कोना : परंपरा छूती बाल सुलभ कहानी.....	25
बेलूर का चेन्नकेशव मंदिर : भारतीय स्थापत्य और शिल्पकला का अनुपम वैभव...27	
व्यंग्य : सपनों का पेट, हकीकत का गिटार ? कब बजेगी फिटनेस की तार ?.....	28
कृषि, प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण और लोक पर्वों का जुलाई.....	31
आत्मनिर्भर समाचार.....	33

# भारतीय संस्कृति में गुरु की महिमा

## भा



भारतवर्ष गुरु-शिष्य परंपरा का वाहक और पोशक रहा है जहां ज्ञान एवं विद्या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होते हैं और नए ज्ञान का सृजन भी होता है। इस प्रक्रिया में शिक्षा के अतिरिक्त नैतिक मूल्य, संस्कार, मानव संस्कृति एवं सभ्यता, जीवन उद्देश्य तथा आध्यात्मिक ज्ञान भी सम्मिलित है। गुरु के सान्निध्य से न केवल शिष्य का चरित्र निर्माण होता है, उसे अच्छा इंसान बनने का पाठ भी सीखने को मिलता है तथा अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट होने का मंत्र भी। मूलतः यह रिश्ता आदर, विश्वास, और प्रेम का रहा है।

रतीय संस्कृति में गुरु की महिमा अपरंपार मानी गई है, जिसके बारे में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं, “गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई। जों बिरंचि संकर सम होई”, और संत कबीरदास जी कहते हैं, “गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष”। स्पष्टतः गुरु के बिना उचित और अनुचित का ज्ञान होना असंभव है। निसंदेह भारतवर्ष गुरु-शिष्य परंपरा का वाहक और पोशक रहा है जहां ज्ञान एवं विद्या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होते हैं और नए ज्ञान का सृजन भी होता है। इस प्रक्रिया में शिक्षा के अतिरिक्त नैतिक मूल्य, संस्कार, मानव संस्कृति एवं सभ्यता, जीवन उद्देश्य तथा आध्यात्मिक ज्ञान भी सम्मिलित है। गुरु के सान्निध्य से न केवल शिष्य का चरित्र निर्माण होता है, उसे अच्छा इंसान बनने का पाठ भी सीखने को मिलता है तथा अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट होने का मंत्र भी। मूलतः यह रिश्ता आदर, विश्वास, और प्रेम का रहा है, परंतु वर्तमान में रिश्तों के क्षरण के अनेकों प्रकरण भी सामने आते हैं, जोकि चिंताजनक है। हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों में ज्ञान की यह शृंखला आज भी निरंतर जारी है। आदि शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद जी जैसे महान संतों ने इसी परंपरा के जरिए समाज को नई दिशा देने का कार्य किया।

गुरुपूर्णिमा गुरु-शिष्य रिश्तों को महत्व देने के लिए ही वेदव्यास जी की जयंती पर्व पर मनाई जाती है। ज्ञात हो कि वेदव्यास जी ने ही वेदों का संकलन और महाभारत की रचना की थी, जिससे इस पर्व को व्यास पूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है। संयोग से महात्मा गौतम बुद्ध ने भी धर्म चक्र प्रवर्तन इसी तिथि को किया था। गुरु अपने शिष्यों से कोई स्वार्थ नहीं रखते हैं, उनका उद्देश्य सभी का कल्याण ही होता है। गुरु को उस दिन अपने कार्यों पर गर्व होता है, जिस दिन उसका शिष्य कुछ महान कार्य करता है। यह पर्व अपने अध्यापकों तथा आध्यात्मिक गुरुओं को सम्मान देने का है।

मनुस्मृति में कहा गया है कि उपनयन संस्कार के बाद विद्यार्थी का दूसरा जन्म होता है। इसीलिए उसे द्विज कहा जाता है। शिक्षापूर्ण होने तक गायत्री उसकी माता तथा आचार्य उसका पिता होता है। समाज के निर्माण में गुरुओं की भूमिका को अहम माना गया है। यह पर्व गुरु के लिए समर्पित है। गुरु हमारे जीवन को पूर्ण करने के लिए माँ के समान है। इस अवसर पर गुरु प्रत्यक्ष यदि विद्यमान हैं तो शिष्य उनका आशीर्वाद लेते हैं और अन्यथा की स्थिति में परोक्ष रूप से उनके द्वारा दी गई दिशा और दृष्टि के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि गुरु-शिष्य संबंधों में हुए ह्रास को दूर कर संबंधों के मूल स्वरूप को कैसे प्राप्त करें? गुरु-शिष्य संबंधों का विकार शून्य होना भारतीय समाज के उत्तम स्वास्थ्य की गारंटी सिद्ध होगी।

# ऊर्जा संकट में स्वदेशी की जरूरत



डॉ. शशांक शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग  
शारदा विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा, उ. प्र.

**आ**ज पूरी दुनिया एक गंभीर ऊर्जा संकट के दौर से गुजर रही है।

ऊर्जा अब केवल विकास का साधन नहीं रही, बल्कि यह वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और कोयले जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर अत्यधिक निर्भरता ने विश्व को अस्थिर बना दिया है। अंतरराष्ट्रीय युद्ध, बढ़ता शहरीकरण, गांवों से पलायन और उपभोक्तावादी जीवनशैली ने इस संकट को और अधिक गहरा कर दिया है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक चुनौती भी है। ऐसे समय में स्वदेशी और आत्मनिर्भरता की भावना ही स्थायी समाधान का मार्ग दिखाती है।

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता देश है, लेकिन अपनी आवश्यकता का लगभग 85 से 89 प्रतिशत कच्चा तेल विदेशों से आयात करता है। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में होने वाला उतार-चढ़ाव सीधे भारतीय

अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया में तनाव के कारण वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति बाधित हुई, जिससे कच्चे तेल और गैस की कीमतों में भारी वृद्धि हुई। हाल के अंतरराष्ट्रीय तनावों के कारण भारत को अपने तेल आयात की रणनीति में लगातार बदलाव करना पड़ा है। ऊर्जा संकट का प्रभाव केवल ईंधन की कीमतों तक सीमित नहीं रहता। जब तेल महंगा होता है, तो परिवहन लागत बढ़ती है, खाद्य पदार्थ महंगे होते हैं, उद्योगों का उत्पादन खर्च बढ़ता है और महंगाई आम जनता पर बोझ बन जाती है। भारत का वार्षिक कच्चा तेल आयात वर्ष 2025 में लगभग 242 मिलियन टन तक पहुंच गया। यह स्थिति बताती है कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा अभी भी बाहरी परिस्थितियों पर अत्यधिक निर्भर है।

वर्तमान समय में बढ़ता शहरीकरण भी ऊर्जा संकट का एक प्रमुख कारण बन गया है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, भारत में शहरी आबादी तेजी से बढ़ रही है और आने वाले वर्षों में यह वृद्धि और अधिक होगी। गांवों से

लोग रोजगार, शिक्षा और आधुनिक सुविधाओं की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। परिणामस्वरूप महानगरों में बिजली, पानी, परिवहन और ईंधन की मांग लगातार बढ़ रही है। बहुमंजिला इमारतें, वातानुकूलित कार्यालय, मॉल, मेट्रो और निजी वाहन ऊर्जा की अत्यधिक खपत करते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, शहरीकरण बढ़ने के साथ ऊर्जा उपयोग और कार्बन उत्सर्जन में कई गुना वृद्धि होती है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2040 तक ऊर्जा की मांग लगभग दोगुनी हो सकती है। यदि यही उपभोक्तावादी मॉडल जारी रहा, तो ऊर्जा संकट और पर्यावरण संकट दोनों बढ़ेंगे। इसलिए स्वदेशी जीवनशैली केवल सांस्कृतिक विचार नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता बन चुकी है।

गांवों से पलायन केवल सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि ऊर्जा संकट से भी जुड़ा विषय है। भारतीय गांव परंपरागत रूप से आत्मनिर्भर रहे हैं। कृषि, पशुपालन, बायोगैस, लकड़ी, जैविक ईंधन और सामुदायिक जीवन गांवों की ऊर्जा व्यवस्था का



आधार थे। लेकिन आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति और केंद्रीकृत विकास मॉडल ने गांवों की अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया। परिणामस्वरूप ग्रामीण युवा रोजगार के लिए शहरों की ओर जा रहे हैं। यदि गांवों में स्थानीय उद्योग, कुटीर रोजगार, सौर ऊर्जा और बायोगैस संयंत्र विकसित किए जाएँ, तो न केवल पलायन कम होगा, बल्कि ऊर्जा की विकेंद्रीकृत और टिकाऊ व्यवस्था भी विकसित होगी। भारत में गर्मी के बढ़ते प्रभाव और शहरी जीवनशैली ने बिजली की मांग को रिकॉर्ड स्तर तक पहुँचा दिया है। मई 2026 में भारत की बिजली मांग 270 गीगावॉट से अधिक दर्ज की गई, जो अब तक का उच्चतम स्तर है। लगातार बढ़ती बिजली मांग के कारण कई राज्यों में बिजली कटौती की स्थिति भी उत्पन्न हुई। यह स्पष्ट संकेत है कि यदि ऊर्जा संरक्षण और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में संकट और गंभीर हो सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत ऊर्जा के क्षेत्र में स्वदेशी और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़े। स्वदेशी का अर्थ केवल देश में बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, स्थानीय तकनीकों और भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित विकास मॉडल अपनाना है। भारत के पास सूर्य, पवन, जल, कृषि अवशेष और जैविक संसाधनों का विशाल भंडार है। यदि इनका वैज्ञानिक और योजनाबद्ध उपयोग किया जाए, तो भारत विदेशी ईंधन पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर सकता है। भारत में सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएँ हैं। देश के अधिकांश भागों में वर्ष भर पर्याप्त धूप उपलब्ध रहती है। गांवों में सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई, स्ट्रीट लाइट और घरेलू बिजली व्यवस्था विकसित की जा सकती है। इसी प्रकार गोबर गैस, बायोमास और कृषि अवशेषों से ऊर्जा उत्पादन ग्रामीण क्षेत्रों को आत्मनिर्भर बना सकता है। इससे पर्यावरण संरक्षण भी होगा और किसानों की आय में

वर्तमान ऊर्जा संकट के प्रमुख कारण और समाधान]

समस्या चुनौती /	तथ्यात्मक स्थिति	प्रभाव	स्वदेशी समाधान
कच्चे तेल पर निर्भरता	भारत लगभग 85% कच्चा तेल आयात करता है	महंगाई, अधिक दबाव	सौर, बायोगैस, एथेनॉल
वैश्विक युद्ध	रूसयूकेन युद्ध से तेल व गैस कीमतों में वृद्धि	ऊर्जा आपूर्ति संकट	स्थानीय ऊर्जा उत्पादन
बढ़ता शहरीकरण	2030 तक भारत की लगभग 40% आबादी शहरों में रहने की संभावना	बिजली और ईंधन की मांग में वृद्धि	स्मार्ट गांव और विकेंद्रीकृत विकास
गांवों से पलायन	रोजगार हेतु ग्रामीण आबादी शहरों की ओर	शहरों पर दबाव, ग्रामीण अर्थव्यवस्था कमजोर	कुटीर उद्योग, ग्रामीण रोजगार
बढ़ती बिजली मांग	2025-26 में भारत की बिजली मांग 270 GW से अधिक	बिजली कटौती और कोयले पर दबाव	ऊर्जा संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा
उपभोक्तावाद	अत्यधिक उपभोग और संसाधनों का दोहन	कार्बन उत्सर्जन और प्रदूषण	अपरिग्रह और संतुलित जीवनशैली
पर्यावरण संकट	वैश्विक तापमान लगभग 1.1°C बढ़ चुका	जलवायु परिवर्तन	प्रकृति आधारित भारतीय जीवनशैली

भी वृद्धि होगी। भारत सरकार ने वर्ष 2030 तक 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता विकसित करने का लक्ष्य रखा है। यह लक्ष्य केवल ऊर्जा उत्पादन नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। गांवों में सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई, बायोगैस संयंत्र, स्थानीय उद्योग और कुटीर रोजगार विकसित करके पलायन को रोका जा सकता है। इससे ऊर्जा की विकेंद्रीकृत व्यवस्था भी मजबूत होगी।

महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज और स्वदेशी को आत्मनिर्भर भारत का आधार माना था। भारतीय संस्कृति सदैव प्रकृति के साथ संतुलन और सहअस्तित्व की बात करती है। “सादा जीवन, उच्च विचार” तथा ‘अपरिग्रह’ जैसे भारतीय मूल्य आज ऊर्जा संरक्षण और सतत विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। ऊर्जा संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यदि हम सार्वजनिक परिवहन का उपयोग बढ़ाएं, अनावश्यक बिजली खपत

कम करें, साइकिल और पैदल चलने की संस्कृति अपनाएं तथा स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता दें, तो ऊर्जा बचत संभव है। “नो पेट्रोल डे” जैसे अभियान समाज में जागरूकता बढ़ाने के प्रभावी माध्यम बन सकते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि वर्तमान ऊर्जा संकट केवल ईंधन की कमी का संकट नहीं, बल्कि असंतुलित विकास मॉडल की चुनौती है। वैश्विक युद्ध, बढ़ता शहरीकरण और गांवों से पलायन ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया है। यदि भारत स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और सतत विकास के मार्ग को अपनाता है, तो वह न केवल ऊर्जा संकट से उबर सकता है, बल्कि विश्व को पर्यावरण संतुलन और मानव कल्याण का नया मार्ग भी दिखा सकता है। आज समय की मांग है कि ऊर्जा संरक्षण को जनआंदोलन बनाया जाए और स्वदेशी जीवनशैली को अपनाकर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य का निर्माण किया जाए।

# सनातन धर्म के गौरव की पुनर्स्थापना का युग



**सतीश शर्मा**  
केशव भाग संघचालक  
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, नोएडा

ऐतिहासिक कार्य किए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल को भारत में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का एक महत्वपूर्ण दौर माना जाता है। विश्लेषकों का मानना है कि इस दौर ने भारतीय समाज में अपनी विरासत, इतिहास और धार्मिक पहचान को लेकर पुराने 'सांस्कृतिक संकोच' को खत्म किया है और लोगों में एक नया वैचारिक आत्मविश्वास जगाया है। पिछले कुछ वर्षों में देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सनातन परंपराओं को राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान मिली है। सरकार के 'विकास भी, विरासत भी' के विजन के तहत सनातन धर्म के गौरव को वैश्विक स्तर पर पुनर्स्थापित करने के लिए निम्नलिखित प्रमुख कार्य किए गए हैं -

500 वर्षों के लंबे संघर्ष और कानूनी प्रक्रिया के बाद अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण और रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा मोदी सरकार के कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

बाबा विश्वनाथ के मंदिर परिसर का विस्तार और भव्य सुंदरीकरण किया गया, जिससे पतित पावनी गंगा से सीधे मंदिर तक सुगम मार्ग बना। उज्जैन में भगवान शिव की

लीलाओं को दर्शाने वाले एक बेहद विशाल और भव्य 'महाकाल लोक' कॉरिडोर का निर्माण किया गया। उत्तराखंड बाढ़ की त्रासदी के बाद केदारनाथ धाम का भव्य पुनर्निर्माण कराया गया और बद्रीनाथ धाम के लिए भी मास्टर प्लान के तहत विकास कार्य जारी हैं। सोमनाथ मंदिर परिसर में समुद्र दर्शन पथ और अन्य अत्याधुनिक सुविधाओं का विकास किया गया। इसके ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करने के लिए भारत सरकार द्वारा विशेष आयोजन भी किए गए हैं।

देश के प्रमुख तीर्थस्थलों और ऐतिहासिक धरोहरों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रसाद योजना की शुरुआत की गई। इसके तहत रामायण सर्किट, कृष्णा सर्किट और आध्यात्मिक सर्किट जैसे विशेष पर्यटन मार्गों का निर्माण किया गया ताकि श्रद्धालु भगवान राम और कृष्ण से जुड़े स्थलों के सुगमता से दर्शन कर सकें। प्रयागराज महाकुंभ जैसे सनातन धर्म के सबसे बड़े सांस्कृतिक समागमों को वैश्विक स्तर पर स्वच्छ, सुरक्षित और सुव्यवस्थित रूप से आयोजित कराया गया। संयुक्त अरब

**आ**ज का समकालीन युग सनातन धर्म के अभूतपूर्व गौरव की पुनर्स्थापना और देश की सोई हुई चेतना को जगाने का युग है। यह कालखंड केवल अतीत के स्मरण तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय कर मानवीय मूल्यों को पुनर्जीवित करने का एक स्वर्णिम अध्याय है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सनातन संस्कृति, आध्यात्मिक विरासत और धार्मिक स्थलों के पुनरुत्थान के लिए कई



अमीरात की राजधानी अबू धाबी में पहले विशाल और पारंपरिक पत्थर के हिंदू मंदिर का निर्माण प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों से संभव हुआ। बहरीन में 200 साल पुराने भगवान श्री कृष्ण श्रीनाथजी मंदिर के पुनर्विकास और अन्य देशों में मौजूद प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों को सहेजने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

दशकों पहले भारत के प्राचीन मंदिरों से चोरी कर विदेशों में तस्करी की गई सनातन देवी-देवताओं की सैकड़ों बहुमूल्य मूर्तियों को प्रधानमंत्री मोदी ने अपने राजनयिक संबंधों के माध्यम से वापस भारत मंगवाया। इन सभी कदमों के माध्यम से देश और दुनिया में सनातन परंपराओं, आस्था के केंद्रों और सांस्कृतिक प्रतीकों को एक नया आत्मबल और गौरवशाली पहचान मिली।

नए संसद भवन में ऐतिहासिक 'सेंगोल' (राजदंड) की स्थापना और स्वतंत्रता सेनानियों व देश के सांस्कृतिक नायकों (जैसे आदि शंकराचार्य, भगवान बिरसा मुंडा) को राष्ट्रीय पटल पर उच्च सम्मान देना इसका उदाहरण है। सनातन संस्कृति के प्राचीन विज्ञान 'योग' को संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई गई, जिसे हर वर्ष दुनिया भर के देश मनाते हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मान्यता दिलाना भारतीय ऋषि परंपरा और दर्शन की वैश्विक स्वीकार्यता का बड़ा प्रतीक बना।

विदेशों में भारतीय संस्कृति की गूंज और वैश्विक मंचों पर पीएम मोदी द्वारा भारतीय दर्शन (जैसे 'वसुधैव कुटुंबकम्') को रेखांकित करना सनातन संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय विस्तार को दर्शाता है। वैकल्पिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण जहां एक बड़ा वर्ग इसे सनातन धर्म के गौरव की पुनर्स्थापना और देश की आत्मा को जगाने वाले युग के रूप में देखता है, वहीं कुछ आलोचकों और राजनीतिक विश्लेषकों का यह भी मानना है



500 वर्षों के लंबे संघर्ष और कानूनी प्रक्रिया के बाद अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण और रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा मोदी सरकार के कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। बाबा विश्वनाथ के मंदिर परिसर का विस्तार और भव्य सुंदरीकरण किया गया, जिससे पतित पावनी गंगा से सीधे मंदिर तक सुगम मार्ग बना। उज्जैन में भगवान शिव की लीलाओं को दर्शाने वाले एक बेहद विशाल और भव्य 'महाकाल लोक' कॉरिडोर का निर्माण किया गया।

कि विकास के मुख्य एजेंडे में बुनियादी ढांचा, शिक्षा, रोजगार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सर्वोपरि रखा जाना चाहिए, ताकि देश आधुनिक और धार्मिक दोनों स्तरों पर संतुलित रूप से आगे बढ़ सके।

भारत की पहचान और उसकी सभ्यता को वैश्विक स्तर पर एक नई स्वीकृति मिल

रही है। ऐतिहासिक स्थानों का कायाकल्प तथा प्राचीन विरासत को सहेजने के प्रयास इस युग की मुख्य पहचान हैं। आज का समाज तेजी से विज्ञान और अध्यात्म के संगम को समझ रहा है। योग, आयुर्वेद और वेदों की सार्वभौमिक शिक्षाएं जन-जन तक पहुंच रही हैं।

# एफसीआरए

## विदेशी धन और आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां



ब्रिगेडियर संजय अग्रवाल

पूर्व सुरक्षा सलाहकार, गृह मंत्रालय, भारत सरकार



**कु**छ समय पहले प्रकाशित अपने एक लेख, जिसका लिंक नीचे दिया गया है, शीर्षक था "Regulating Foreign Funds: A Necessary Tightrope Walk" इसमें मैंने प्रस्तावित विदेशी अंशदान (विनियमन) संशोधन विधेयक, 2026 (FCRA Amendment Bill, 2026) पर अपने विचार प्रस्तुत किए थे। उस लेख में मैंने इस बात पर जोर दिया था कि यह विषय केवल एक कानूनी या नीतिगत संशोधन भर नहीं है, बल्कि यह पारदर्शिता, राष्ट्रीय संप्रभुता और नागरिक समाज की स्वतंत्रताओं के बीच एक संवेदनशील संतुलन स्थापित करने का प्रश्न है। इसके बाद हुई घटनाओं ने इस विषय पर पुनर्विचार को आवश्यक बना दिया है।

तब से भारत में संवेदनशील क्षेत्रों में सक्रिय एक विदेशी वित्तपोषण नेटवर्क की जांच और उससे जुड़े खुलासे सामने आए हैं। विदेशी बैंकों द्वारा जारी डेबिट कार्डों तथा सीमा-पार वित्तीय लेनदेन का अपारदर्शी उद्देश्यों के लिए उपयोग चिंताजनक है। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि विदेशों में होस्ट किए गए डिजिटल रिपोर्टों को कथित

रूप से दूरस्थ रूप से मिटा दिया गया, जिससे डिजिटल युग में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय नेटवर्कों की जांच और भी जटिल हो गई है। इसी अवधि में अमेरिका में भारत के प्रस्तावित एफसीआरए संशोधनों की आलोचना कुछ नीति-निर्माण हलकों में दिखाई दी, जबकि भारत लगातार अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (USCIRF) द्वारा भारत को निशाना बनाए जाने का विरोध करता रहा।

मैं किसी निष्कर्ष पर पहुंचने या प्रत्यक्ष कारण-परिणाम संबंध स्थापित करने की जल्दबाजी नहीं कर रहा हूँ। किंतु रणनीतिक विश्लेषण केवल घटनाओं को अलग-अलग देखकर नहीं किया जाता। इसके लिए उनके समय, क्रम और व्यापक रणनीतिक संदर्भ का अध्ययन आवश्यक होता है। वर्तमान परिस्थितियों में यह अध्ययन विशेष उत्साहजनक नहीं दिखता। नीचे दी गई समय-रेखा को मैं केवल एक रोचक "पैटर्न-रिकग्निशन परिकल्पना" के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ, ताकि पाठक स्वयं अपने निष्कर्ष निकाल सकें।

USCIRF → FCRA विधेयक → द

टिमोथी इनिशिएटिव → रुबियो की भारत यात्रा → जी-7 सम्मेलन के दौरान मोदी-ट्रम्प मुलाकात → USINDOPACOM का नाम परिवर्तन → अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर की भारतीय गृह मंत्री से भेंट।

### घटनाक्रम

**4 मार्च 2026** : USCIRF ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी की, जिसमें एक बार फिर भारत की आलोचना की गई।

**16 मार्च 2026** : भारत ने रिपोर्ट का कड़ा प्रतिवाद किया।

**25 मार्च 2026** : भारत ने लोकसभा में एफसीआरए संशोधन विधेयक, 2026 प्रस्तुत किया।

**18 अप्रैल 2026** : भारत ने अमेरिकी डेबिट कार्डों के माध्यम से नक्सलियों तक धन पहुंचाने वाले एक नेटवर्क का पर्दाफाश किया। बेंगलुरु में द टिमोथी इनिशिएटिव (TTI) से जुड़े कथित ऑपरेटिव माइका मार्क को गिरफ्तार किया गया। उसके पास अमेरिकी बैंक ट्रुस्ट द्वारा जारी 24 विदेशी डेबिट कार्ड पाए गए। इसके बाद विभिन्न राज्यों में छापेमारी शुरू हुई।

**23-24 अप्रैल 2026 :** नक्सल-प्रभावित क्षेत्रों में सक्रिय टीटीआई और विदेशी डेबिट कार्ड नेटवर्क से जुड़े संचालन के विवरण सामने आने लगे।

**24 अप्रैल 2026 :** प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने कई राज्यों में समन्वित छापेमारी की। जांच में लगभग 95 करोड़ रुपये के विदेशी धन तथा अमेरिकी बैंकों द्वारा जारी 25 डेबिट कार्डों का पता चला।

**23 मई 2026 :** अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो भारत यात्रा पर पहुंचे। उन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत कोलकाता में मिशनरीज ऑफ चैरिटी के दौरे से की, उसके बाद आगरा और जयपुर गए, तथा अंततः नई दिल्ली में क्वाड शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। कुछ विश्लेषकों ने टिप्पणी की कि भारत में उन्हें अपेक्षित गर्मजोशी नहीं मिली और मीडिया कवरेज भी अपेक्षाकृत सीमित रहा।

**11 जून 2026 :** छह व्यक्तियों के विरुद्ध गैरकानूनी गतिविधियां (निवारण) अधिनियम (UAPA) के तहत एक औपचारिक आपराधिक प्राथमिकी दर्ज की गई। भारतीय एजेंसियां अब वित्तीय लेजर, डेटा ट्रेल और फंडिंग नेटवर्क की गहन जांच कर रही हैं।

विदेशी डेबिट कार्डों के माध्यम से नक्सली वित्तपोषण और डेटा मिटाने का मामला— डेटा मिटाने की समय-रेखा तत्काल प्रणाली अवरोध (System Blackout) : 18 अप्रैल 2026 को माइका मार्क की गिरफ्तारी और उसके बाद हुई छापेमारी के तुरंत बाद टीटीआई का वैश्विक पोर्टल भारत में ब्लॉक कर दिया गया और भारतीय उपयोगकर्ताओं के लिए अनुपलब्ध हो गया।

**रिमोट क्लाउड डेटा विलोपन :** अमेरिका स्थित सर्वरों तक पहुंच रखने वाले संचालकों ने कथित रूप से क्लाउड-आधारित डेटाबेस को दूरस्थ रूप से पूरी तरह मिटा दिया। इससे 1,000 से अधिक विदेशी डेबिट कार्डों से जुड़े लेनदेन रिकॉर्ड समाप्त हो गए।

माइका मार्क का कथित स्वीकारोक्ति में

उसने कथित रूप से स्वीकार किया कि स्थानीय नेटवर्क और फील्ड कार्यकर्ताओं के नाम छिपाने के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय डेटाबेस को नष्ट कर दिया गया था।

**कानूनी और जांच संबंधी परिणाम**

**साक्ष्य नष्ट करने के आरोप :** क्योंकि इन कार्रवाइयों से जांच प्रभावित हुई, इसलिए 11 जून को दर्ज प्राथमिकी में इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों के मिटाने से संबंधित अतिरिक्त आरोप भी जोड़े गए।

**फोरेंसिक पुनर्प्राप्ति प्रयास :** भारतीय एजेंसियों के साइबर विशेषज्ञ और डिजिटल फोरेंसिक टीमों ने जल्द किए गए उपकरणों, कैश लॉग और अन्य डिजिटल निशानों की

**भारत में संवेदनशील क्षेत्रों में सक्रिय एक विदेशी वित्तपोषण नेटवर्क की जांच और उससे जुड़े खुलासे सामने आए हैं। विदेशी बैंकों द्वारा जारी डेबिट कार्डों तथा सीमा-पार वित्तीय लेनदेन का अपारदर्शी उद्देश्यों के लिए उपयोग चिंताजनक है। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि विदेशों में होस्ट किए गए डिजिटल रिकॉर्डों को कथित रूप से दूरस्थ रूप से मिटा दिया गया, जिससे डिजिटल युग में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय नेटवर्कों की जांच और भी जटिल हो गई है।**

सहायता से मिटाए गए डेटा को पुनर्निर्मित करने का प्रयास कर रही हैं।

**13 जून 2026 :** जी-7 शिखर सम्मेलन से ठीक पहले अमेरिका में दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों से जुड़े कुछ सांसदों और नीति विशेषज्ञों ने भारत के प्रस्तावित एफसीआरए संशोधनों पर चिंता व्यक्त की।

**16 जून 2026 :** अमेरिका ने अपने US Indo-Pacific Command

(USINDOPACOM) के नाम से “इंडा” शब्द हटाकर उसे पुनः USPACOM नाम देने की घोषणा की।

**17 जून 2026 :** जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बीच द्विपक्षीय बैठक हुई, जो नाम परिवर्तन की घोषणा के कुछ घंटों बाद आयोजित हुई।

**18 जून 2026 :** भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने भारतीय गृह मंत्री से मुलाकात की। सार्वजनिक रूप से घोषित एजेंडा में आतंकवाद-रोधी सहयोग, सीमा सुरक्षा और क्षेत्रीय मादक पदार्थ तस्करी से जुड़े मुद्दे शामिल थे।

इस तरह विश्व का प्रत्येक लोकतांत्रिक देश विदेशी वित्तपोषण को कुछ नियामक शर्तों के अंतर्गत अनुमति देता है। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या लोकतांत्रिक राज्यों के पास ऐसे पर्याप्त तंत्र मौजूद हैं जो पारदर्शिता, जवाबदेही और बाहरी प्रभाव-कार्यों से राष्ट्रीय हितों की रक्षा सुनिश्चित कर सकें। जैसे-जैसे भारत एफसीआरए व्यवस्था के भविष्य पर विचार कर रहा है, यह मुद्दा केवल अनुपालन तक सीमित नहीं रह गया है। यह अब बढ़ते हुए राष्ट्रीय संप्रभुता, आंतरिक सुरक्षा और शासन-व्यवस्था का प्रश्न बनता जा रहा है। कभी-कभी घटनाओं का समय और उनका क्रम स्वयं कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाते हैं।



<https://goachronicle.com/regulating-foreign-funds-a-necessary-tightrope-walk/>

# पश्चिम बंगाल : डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट



अशोक कुमार सिन्हा  
उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, अवध



**भा**रत भूमि प्राचीन काल से दुनिया के आकर्षण का केंद्र रही है। यहाँ की प्राकृतिक बनावट, जीवन पद्धति, समुन्नत सभ्यता और संस्कृति, धन संपदा, प्राचीन गणतन्त्र तथा आध्यात्म आधारित जीवन पूरी दुनिया का आदर्श बना रहा। यही कारण रहा है कि यहाँ कोई लुटेरा बन कर आया कोई व्यापारी बन कर आया तो कोई ज्ञान विज्ञान से आकर्षित होकर भारत भूमि पर आया। कुछ को यह देश इतना आकर्षक लगा की वे यहाँ के समाज में घुलमिल गए तथा यहीं के हो कर रह गए। समस्या तब उत्पन्न हुई जब बाहर से मजहब और रिलिजन के अनुयायी यहाँ कब्जा करने के इरादे से उत्पात मचाने लगे तथा डेमोग्राफी बदलने लगे। इस देश को उन्होंने धर्मशाला समझ लिया और हमसे शत्रुवत् व्यवहार करने लगे। स्वतंत्रता के बाद शासन व्यवस्था ऐसी आई की वोट लेकर सत्ता में बने रहने हेतु घुसपैठियों का तुष्टिकरण खुलेआम होने लगा। विदेशों में जन्मे मजहब और रिलिजन के मतावलंबी आक्रामक रूप से देश के संसाधनों पर कब्जा करने लगे। लचर कानून व्यवस्था तथा लालची राजनीतिज्ञों का सहारा लेकर वे देश कब्जाने का सपना देखने लगे। उन्होंने संख्याबल के आधार पर सत्ता प्राप्त

करने के उद्देश्य से घुसपैठ, धर्मांतरण, लव और भूमि जेहाद का रास्ता चुना। पश्चिम बंगाल, आसाम, जम्मू काश्मीर, केरलम और पूर्वोत्तर के कई राज्य इस समस्या के केंद्र बन गए। सबसे खतरनाक स्थिति पश्चिम बंगाल और आसाम की हो गई। जनसांख्यिकीय बदलाव राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन गए। आर्थिक और सामाजिक समस्या तो पहले से ही थी। आंतरिक अशांति, बाहरी खतरों और राष्ट्र की संप्रभुता का संकट खड़ा हो गया। बांग्लादेश और म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों से घुसपैठ के कारण पश्चिमी बंगाल, असम, त्रिपुरा और बिहार के सीमावर्ती जिलों सहित देश के अन्य स्थानों में घुसपैठियों की संख्या एक अनुमान के अनुसार दस करोड़ तक पहुंच गई है। देश की सीमा पर तस्करी, राष्ट्र विरोधी गतिविधियों जैसे जासूसी, जमीनों पर कब्जे, क्षेत्रीय भाषाई टकराव, सांस्कृतिक पहचान पर संकट जैसी चुनौतियां खड़ी हो गई। इन क्षेत्रों में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर, असम आंदोलन समझौता, रोजगार, भूमि स्वामित्व जैसे विषय चर्चा के केंद्र बने। घुसपैठिये तय करने लगे कि सरकार कौन चलाएगा। संविधान के अनुच्छेद 326 में केवल भारतीय नागरिकों को वोट देने

का अधिकार है परंतु घुसपैठियों के वोटर लिस्ट, राशन कार्ड, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस सब सुनियोजित तरीके से बनवा दिए गए। घुसपैठिया तो राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर वोट देगा नहीं वो तो यह देखेगा कि कौन उसे इस देश में रहने देगा। इन सब संकटों के बीच जनजागरण हुआ और बंगाल असम की जनता की निद्रा टूटी। सत्ता परिवर्तन हुआ तो व्यवस्थाएं बदली। यह एक ईश्वरीय चमत्कार जैसा हुआ है। सत्ता बदलते ही बांग्लादेश सीमा पर घुसपैठियों की भीड़ वापस बांग्लादेश जाने के लिए इकट्ठी होने लगी है।

बंगाल चुनाव में अपने भाषणों में प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और बीजेपी के कई मंत्रियों ने बंगाल की जनता को यह आश्वासन दिया था कि चुनाव जीतने के बाद घुसपैठियों की समस्या को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए डिलीट, डिटेक्ट और डिपोर्ट किया जाएगा। देश के चुनाव आयोग ने एस आई आर प्रक्रिया से कुछ सीमा तक कुछ घुसपैठियों को वोट देने से रोका है। परंतु बंगाल में घुसपैठियों की संख्या करोड़ों में है। वामपंथी, कांग्रेस और ममता सरकार में ये घुसपैठिये अपनी इतनी गहरी पैठ बंगाल में बना चुके हैं कि उन्हें एक झटके में बाहर

निकालना बहुत मुश्किल है। परंतु यह कार्य असंभव भी नहीं है। आवश्यकता है सत्ता की दृढ़ इक्षाशक्ति की। कुशल प्रशासनिक व्यवस्था तथा केंद्र सरकार की प्रभावी विदेश नीति की। सेंटर फॉर रिसर्च फॉर इंडो बांग्लादेश रिलेशन के अनुसार उत्तर और दक्षिण 24 परगना, नादिया, मुर्शिदाबाद, वीरभूमि, हावड़ा और कोलकता आदि स्थानों पर ब्लॉक स्तर पर शोध करने के बाद यह पाया है कि इन क्षेत्रों में सर्वाधिक बांग्लादेशी बहुत गहराई तक अपनी पैठ बना चुके हैं। वर्ष 2011 की जनगणना में मुर्शिदाबाद में 66 प्रतिशत, मालदा में 51.27 प्रतिशत तथा उत्तर दिनाजपुर में मुस्लिम आबादी 50 प्रतिशत पाई गई थी जिसमें अधिकांश मुस्लिम 1971 युद्ध के समय शरणार्थी बन कर आए थे। इनके लिंक बंगला देश में बहुत अच्छे हैं तथा ये आज भी बांग्लादेश से आए घुसपैठियों को शेल्टर दे कर देश और बंगाल के अन्य स्थानों पर बसाने का सिंडिकेट चलाते हैं। इन क्षेत्रों में अवैध मदरसों और मस्जिदों का जाल बिछा हुआ है जहाँ से ये सिंडिकेट अपना कार्य करते हैं। यहाँ से हिंदू पलायन कर रहे हैं क्यों कि भारत में ही संभव है हिंदुओं का पलायन। हिंदुओं को अब छोड़ना होगा भगोड़ापन। सरकार हिंदू या किसी भी समुदाय को सीमित संरक्षण दे सकती है। समस्या से डर कर भाग जाना कोई समाधान नहीं है। समाधान हिंदू एकता से ही आयेगा। बंगलादेश भारत सीमा पर आज भी लगभग 700 किलोमीटर तक फेंसिंग सुरक्षा के तार नहीं बिछे हैं। अब सरकार बदलने पर बॉर्डर सिक्वोरिटी फोर्स को जमीन हस्तांतरित कर दी गई है तथा युद्धस्तर पर बाड़बंदी का कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। इस कार्य में समय लगेगा। घुसपैठ पर माधव गोडबोले की रिपोर्ट केंद्र सरकार को भेजी गई थी जिसमें घुसपैठ रोकने के लिए विगत सरकारों की तीव्र भर्त्सना की गई थी और वर्तमान सरकार के प्रयासों को नाकाफी बताया गया था। हो सकता है कि शेख हसीना की बांग्लादेश में सरकार थी जिससे भारत सरकार के अच्छे रिश्ते थे अतः शेख हसीना

कहीं नाराज न हो जाए इस लिए तेजगति से कदम न उठाये गए हों। आज बांग्लादेश में सरकार भारत विरोधी बर्ताव कर रही है अतः आवश्यकता है कि कड़ाई से घुसपैठ रोकने के सभी कदम उठाये जाएं।

भारत सरकार और बंगाल सरकार को समन्वित रूप से मिल कर तेज गति से काम करने का समय आ गया है। धन या सुरक्षा एजेंसियों की बड़ी संख्या और मात्रा में व्यवस्था करनी होगी। खुफिया तंत्र को बड़ी संख्या में तैनाती कर के सभी संस्थाओं को सक्रिय करना होगा जिससे जो सरकारी कागजपत्र घुसपैठियों ने बनवा कर भारतीय होने की खानापूर्ति कर ली है उसे निरस्त किया जा सके। यह उचित समय है कि बंगाल में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर कार्यक्रम तेजी से ईमानदारी पूर्वक सभी वैधानिक औपचारिकताओं को पूरा करते हुए प्रारंभ किया जाय। इस समय बंगाल की अधिकांश जनता वर्तमान सरकार का साथ देगी अतः अवसर को गवाना नहीं चाहिए। एसआईआर भी ताजा-ताजा हुआ है अतः इस दिशा में कुछ काम हो चुका है बाकी काम बहुत तेजी से पूरा करना होगा। इस कार्य से डिलीट वाला कार्य होगा।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है डिटेक्ट करने का। अभी वर्तमान सरकार बहुत सावधानी पूर्वक सुविधाएं दे कर बंगलादेशियों को एक महीने का राशन दे कर बॉर्डर से अपने देश जाने की पहल कर रही है लेकिन जाने वालों की संख्या बहुत कम है। अभी आवश्यकता है बड़ी संख्या में डिटेन्शन सेंटर के निर्माण करने की। इन सेंटरों में पहचाने गए विदेशियों को अस्थायी रूप से रख कर कारावास जैसी सुविधा प्रदान करनी होगी। इस कार्य पर खर्च बहुत आएगा। मुझे याद है कि 1971 में बांग्लादेशी शरणार्थियों के अतिरिक्त खर्चों को वहन करने के लिए इंदिरा गांधी ने सम्पूर्ण देश में सेस लगाया था। उस समय दस पैसे के रेवेन्यू टिकट का दाम बीस पैसे कर दिया गया था। वर्तमान सरकार यदि आह्वान कर

देशवासियों से बंगाल समस्या के लिए कोई कदम उठाती है तो देश की जानता इसमें सहयोग कर सकती है। वैसे सरकार स्वयं सक्षम है। यह कार्य नितांत आवश्यक है।

तीसरा सबसे कठिन कार्य है डिपोर्ट करने का। बांग्लादेश की वर्तमान सरकार आसानी से इतनी बड़ी संख्या में अपने ही नागरिकों को लेने के लिए तैयार नहीं होगी। वह अंतरराष्ट्रीय कानूनों का हवाला देगी। बांग्लादेशी नागरिकता के पक्के सबूत मांगेगी। भारत सरकार को अनेक क्या अधिकांश मामलों में अपने ही न्यायालय में जाना पड़ेगा जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि भेजा जानेवाला व्यक्ति वास्तव में बांग्लादेशी या म्यामारी है। यह कहीं से भी भारतीय नागरिक नहीं है। यह एक कठिन प्रक्रिया है। समय बहुत लगेगा। यह भी संभव है कि अनेक बांग्लादेशी या म्यामारी यह सिद्ध करने में सफल हो जाएं की वे बहुत लंबे समय से भारत में रह रहे हैं और उन्हें भारत में ही रहने दिया जाय। परंतु भारत सरकार इनको भारत पर बोझ मानेगी। वर्तमान सरकार तो किसी कीमत पर उन्हें भारतीय स्वीकार नहीं करेगी न ही वह उन्हें भारत में रहने देगी। भले ही भारत सरकार उन्हें विदेशी नागरिक मानते हुए, वोटिंग अधिकार समाप्त करते हुए या भारतीय समस्त सुविधाओं, योजनाओं के लाभ से वंचित करते हुए भारत में कुछ और समय तक, जब तक बांग्लादेश उन्हें स्वीकार न करे तब तक के लिए उन्हें सीमित क्षेत्र में सश्रम कार्य करते हुए जीवन यापन की अनुमति दे। इस बीच भारत सरकार को अपने समस्त अंतरराष्ट्रीय संबंधों का प्रयोग करते हुए बांग्लादेश पर दबाव बनाना होगा कि वह अपने नागरिकों को वापस ले और इसके बाद भी यदि बांग्लादेश न माने तो अंतिम उपाय यह होगा कि भारत सरकार अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का प्रयोग कर बांग्लादेश बॉर्डर पर कुछ ऐसी व्यवस्था करे जहां भारत में रह रहे घुसपैठियों को विस्थापित किया जा सके।



# गुरु पूर्णिमा

## जब व्यक्ति नहीं, आदर्श बने गुरु



**मोनिका चौहान**  
स्वतंत्र टिप्पणीकार

**भा**रतीय संस्कृति में गुरु का स्थान केवल एक शिक्षक अथवा मार्गदर्शक का नहीं, बल्कि जीवन को प्रकाश प्रदान करने वाले उस दिव्य तत्व का है, जो मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान, सीमितता से व्यापकता और स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाता है। इसीलिए

उपनिषद् उद्घोष करते हैं- “यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ” अर्थात् परमात्मा के समान ही गुरु के प्रति भी परम श्रद्धा का भाव होना चाहिए। आषाढ़ पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला गुरु पूर्णिमा महोत्सव इसी श्रद्धा, कृतज्ञता और आत्मचिंतन का पावन अवसर है।

हिन्दू समाज में विभिन्न पंथों, सम्प्रदायों और परम्पराओं के अनुयायी अपने-अपने गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं। कोई किसी संत को अपना मार्गदर्शक मानता है तो कोई किसी महापुरुष को अपना आदर्श। यह भारतीय जीवन की एक सुंदर परम्परा है। किन्तु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और राष्ट्र सेविका समिति की गुरु-परम्परा इस दृष्टि से विशिष्ट है कि यहां किसी जीवित अथवा दिवंगत व्यक्ति की नहीं, बल्कि उन शाश्वत

आदर्शों की वंदना की जाती है, जिन्होंने सहस्राब्दियों से भारत के राष्ट्रीय जीवन को दिशा प्रदान की है।

सन् 1925 में जब परम पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, तब अनेक स्वयंसेवकों की स्वाभाविक इच्छा थी कि संघ के संस्थापक होने के नाते डॉक्टर जी को ही गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया जाए। कुछ लोगों ने संत-महात्माओं तथा अन्य महान विभूतियों के नाम भी सुझाए। इस विषय पर विचार करते हुए डॉक्टर जी ने अत्यंत मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका स्पष्ट मत था कि व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो, वह सर्वथा पूर्ण नहीं हो सकता। व्यक्ति का जीवन सीमित होता है, जबकि आदर्श शाश्वत होते हैं। संगठन का आधार किसी व्यक्ति विशेष के बजाय उन सनातन मूल्यों पर होना चाहिए, जो काल, परिस्थिति और व्यक्तित्व के परिवर्तन से परे रहकर आने वाली पीढ़ियों को भी समान रूप से प्रेरित कर सकें।

डॉ. हेडगेवार के इसी चिंतन को सन् 1928 की गुरु पूर्णिमा पर औपचारिक स्वरूप प्राप्त हुआ। उसी वर्ष पहली बार परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और गुरु-दक्षिणा की परम्परा का शुभारम्भ हुआ। यह केवल एक संगठनात्मक निर्णय नहीं था, बल्कि व्यक्ति-पूजा के स्थान पर सिद्धांत-पूजा की भारतीय परम्परा की पुनर्प्रतिष्ठा थी।

भारतीय संस्कृति का मूल स्वर भी यही है। विश्व की अनेक सभ्यताओं ने भौतिक सुख-सुविधाओं उपभोग और संसाधनों की प्राप्ति को जीवन का प्रमुख लक्ष्य माना है। किन्तु भारतीय संस्कृति ने मानवता को आत्मसंयम, त्याग, यज्ञभावना तथा लोक मंगल का मार्ग प्रदर्शित किया है। भारतीय चिंतन के अनुसार जीवन की सार्थकता केवल अर्जन और उपभोग में नहीं बल्कि स्वयं को समाज और राष्ट्र के कल्याण हेतु

समर्पित करने में निहित हैं। यही कारण है कि त्याग, सेवा और समर्पण को यहां सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ।

हमारी प्राचीन संस्कृति का यही तेजस्वी स्वरूप भगवा रंग में अभिव्यक्त होता है। यज्ञ की प्रज्वलित अग्नि के समान उसकी स्वर्णिम आभा मनुष्य को स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र और समाज के लिए जीने की प्रेरणा देती है। उसमें तप है, त्याग है, शौर्य है, सेवा है और आत्मसमर्पण का दिव्य संदेश है। यही कारण है कि भगवा ध्वज भारत की सांस्कृतिक चेतना, गौरवशाली इतिहास और अखण्ड परम्परा का प्रतीक बन गया है।

संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार का अपना जीवन भी इन्हीं आदर्शों की सजीव अभिव्यक्ति था। उन्होंने कभी स्वयं को आदर्श के रूप में स्थापित करने का प्रयास नहीं किया। उनका मानना था कि मनुष्य सतत् विकासशील है और किसी व्यक्ति को अंतिम तथा पूर्ण मान लेना उचित नहीं। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में भविष्य में कोई विचलन आ जाए तो उसके अनुयायियों के मन में

निराशा उत्पन्न हो सकती है, किन्तु सिद्धांत कभी विचलित नहीं होते। यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवनकाल में कभी व्यक्तिपूजा को स्थान नहीं दिया। उनके लिए ध्येय सर्वोपरि था और उनका सम्पूर्ण जीवन उसी ध्येय में समर्पित था।

गुरु पूर्णिमा का यह पर्व केवल पूजा-अर्चना का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी दिवस है। यह हमें स्मरण कराता है कि जीवन की वास्तविक सार्थकता संग्रह में नहीं, समर्पण में है; अधिकारों में नहीं, कर्तव्यों में है; और व्यक्तिगत उपलब्धियों में नहीं, सामूहिक कल्याण में है। जब मनुष्य अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यापक हित के लिए जीना सीखता है, तभी उसका जीवन वास्तव में अर्थपूर्ण बनता है।

आज जब व्यक्तिवाद और आत्मकेन्द्रित जीवन-दृष्टि का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है, तब गुरु पूर्णिमा का यह संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो उठता है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि व्यक्ति बदलते हैं, परन्तु

आदर्श शाश्वत होते हैं; व्यक्तित्व सीमित होते हैं, परन्तु सिद्धांत अमर होते हैं।

वस्तुतः गुरु पूर्णिमा किसी व्यक्ति विशेष की नहीं, बल्कि त्याग, तपस्या, सेवा, समर्पण और राष्ट्रनिष्ठा जैसे सनातन मूल्यों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने का महापर्व है। परम पवित्र भगवा ध्वज के समक्ष नतमस्तक होते समय व्यक्ति किसी जड़ वस्तु के सामने नहीं, बल्कि भारत की अखण्ड सांस्कृतिक चेतना, उसके गौरवशाली इतिहास और उसके अमर आदर्शों के समक्ष अपना मस्तक झुकाता है।

निस्संदेह वह दिन भारत के लिए परम सौभाग्य का होगा, जब सम्पूर्ण राष्ट्र व्यक्ति-पूजा से ऊपर उठकर आदर्श-पूजा की इस महान परम्परा को आत्मसात करेगा और त्याग, सेवा तथा राष्ट्रसमर्पण के उन मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाएगा, जिन्होंने इस देश को हजारों वर्षों तक जीवंत, जाग्रत और अमर बनाए रखा है।

प्रेरक प्रसंग

## स्वयंसेवक कौन - सेवा जब स्वभाव बन जाए....



एक बार एक वृद्ध व्यक्ति और एक युवक सड़क के किनारे बस की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी वहां एक अंधा व्यक्ति आया। उसे सड़क पार करनी थी, लेकिन तेज यातायात के कारण वह सड़क पार नहीं कर पा रहा था।

पहली स्थिति में वृद्ध व्यक्ति ने युवक से कहा, “बेटा, इन्हें सड़क पार करा दो।” युवक ने प्रसन्नता से उनकी बात मानी और उस अंधे व्यक्ति को सुरक्षित सड़क पार करा दी। यह एक अच्छा कार्य था, परन्तु उसने यह कार्य किसी के कहने पर किया था।

### अब उसी घटना को दूसरी दृष्टि से देखें।

एक बार एक वृद्ध व्यक्ति और एक युवक सड़क के किनारे बस की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी वहां एक अंधा व्यक्ति आया। उसे सड़क पार करनी थी, लेकिन तेज यातायात के कारण वह सड़क पार नहीं कर पा रहा था।

युवक ने यह देखा और बिना किसी के कहे स्वयं आगे बढ़ा। उसने उस व्यक्ति का हाथ थामा और उसे सुरक्षित सड़क पार करा दी। उस व्यक्ति के चेहरे पर संतोष देखकर युवक के मन में भी आनंद और तृप्ति का भाव उमड़ आया।

दोनों परिस्थितियों में कार्य एक ही था - एक असहाय व्यक्ति को सड़क पार कराना। किंतु दोनों में एक सूक्ष्म अंतर था। पहली बार युवक ने प्रेरणा बाहर से प्राप्त की थी, जबकि दूसरी बार प्रेरणा उसके भीतर से जागी थी। यही अंतर एक सामान्य व्यक्ति और स्वयंसेवक के बीच होता है।

स्वयंसेवक वह नहीं है जो केवल किसी के आदेश पर सेवा करता है। “स्वयंसेवक वह है, जिसके भीतर समाज के प्रति संवेदना जागृत हो, जो आवश्यकता को स्वयं पहचाने, बिना किसी अपेक्षा और बिना किसी निर्देश के आगे बढ़कर अपना कर्तव्य निभाए।” सेवा उसके लिए कोई कार्य नहीं, बल्कि स्वभाव होती है; और समाज का दुःख उसे अपना दुःख प्रतीत होता है। इसलिए कहा जाता है- “जहां किसी के कहने की आवश्यकता समाप्त हो जाए और कर्तव्य का भाव स्वयं जागृत हो जाए, वहीं से स्वयंसेवक का जन्म होता है।”

# प्राचीन भारतीय महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट



प्रो. बलवंत सिंह राजपूत

वरिष्ठ वैज्ञानिक, पूर्व कुलपति तथा पूर्व  
अध्यक्ष, उत्तरप्रदेश राज्य उच्च शिक्षा परिषद

**पाँ**वी शताब्दी में भारत में एक महान गणितज्ञ तथा खगोल वैज्ञानिक आर्यभट्ट हुए थे जिनके अति उच्च स्तरीय मौलिक शोध ने भारत को गणित तथा खगोल के वैश्विक गुरु के रूप में स्थापित किया था। इनके जन्म तथा बचपन संबंधित विस्तृत जानकारी इनकी स्वयं की रचनाओं में उल्लिखित नहीं मिलती है। इन्होंने केवल मात्र इतना उल्लेख अपनी एक रचना में किया है कि वे कलियुग के (युधिष्ठिर संवत् के) 3600 वे वर्ष में 23 वर्ष के थे तथा उनका जन्म कुसुमपुरा (अर्थात् पाटलिपुत्र) में हुआ था। इसके अनुसार उनका जन्म 499 ई. में हुआ था। इनके शिष्य प्रसिद्ध गणितज्ञ भास्कर (प्रथम) के उल्लेख के अनुसार इनका (आर्यभट्ट का) जन्म बुद्ध के काल में असमाकया परिवार में नर्मदा और गोदावरी के मध्य के क्षेत्र में युधिष्ठिर संवत् 3554 में (अर्थात् 476 ई. में) हुआ था।

एक अन्य मान्यता के अनुसार इनका जन्म वर्तमान केरल की प्राचीन राजधानी थिरुवंचिकुलम में हुआ था। कुछ ग्रंथों में उल्लेख मिलते हैं कि वे उच्च अध्ययन हेतु कुसुमपुरा (पाटलिपुत्र) गये थे और वहां कुछ समय रहे थे। यह भी उल्लेख मिलता है कि वे कुसुमपुरा की एक विश्वविख्यात अकादमिक संस्थान के अध्यक्ष थे। उन दिनों का विश्वविख्यात संस्थान नालंदा विश्वविद्यालय कुसुमपुरा (पाटलिपुत्र) में ही

था तो कुछ लेखकों के अनुमान के अनुसार आर्यभट्ट नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति रहे थे। यह भी उल्लेख मिलता है कि आर्यभट्ट ने तारेगना (बिहार) में सूर्यमंदिर में खगोल शोध हेतु एक विशाल प्रयोगशाला स्थापित की थी। उनका खगोल शास्त्र में किया गया शोध सूर्य सिद्धांत का आधार बना था जिसमें कई खगोलीय यंत्रों का उल्लेख भी मिलता है जैसे शंकु यंत्र, छाया यंत्र, धनुयंत्र, चक्र यंत्र, बेलनाकार यष्टि यंत्र, छत्र यंत्र तथा दो आकारों (धनुष आकार और बेलन आकार) की जलघड़ी।



आर्यभट्ट ने गणित तथा खगोल विज्ञान पर कई बहुत मौलिक पुस्तकें लिखी थी जिनमें उनके द्वारा गणित, बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, गोल ठोस त्रिकोणमिति, द्विघात समीकरण, घात श्रेणियों और ज्या, कोज्या की सारणी पर किए शोध का आधुनिक गणित के विकास में बहुत महत्व है। इनकी पुस्तकों में से केवल अति प्रसिद्ध पुस्तक आर्यभट्टिय ही वर्तमान में उपलब्ध हो पायी है। इस अद्भुत पुस्तक की रचना उन्होंने 23 वर्ष की अवस्था में पूर्ण कर ली थी। खगोलीय गणित की इस अनुपम पुस्तक में वर्णित सिद्धांतों को निम्नांकित चार भागों में वर्गीकृत किया जाता है-

i) गीतिका पद : इस में पृथ्वी और अन्य ग्रहों की गति से संबंधित दस प्रसिद्ध सूत्र हैं। जो ग्रहों और सूर्य के मध्य गुरुत्वाकर्षण का बल प्रतिपादित करते हैं।

ii) गणित पद : इसमें उल्लेखित एक सौ अठारह संस्कृत श्लोकों में तैंतीस प्रसिद्ध श्लोक वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, त्रिभुज के क्षेत्रफल तथा समानांतर आधार के घन के आयतन, वृत्त के क्षेत्रफल तथा गोले के आयतन, समकोण त्रिभुज के आधार तथा लंब, समकोण त्रिभुज के विकर्ण, ज्या तथा कोज्या, भिन्न के दसमलव मान तथा कोट्टक गणित से संबंधित हैं। लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व महान गणितज्ञ आर्यभट्ट द्वारा प्रतिपादित ये सभी श्लोक आधुनिक गणित का आधार बने जिनमें उल्लिखित पाई (वृत्त की परिधि और व्यास का अनुपात) का मान विस्मयकारी रूप से दसमलव के चार अंकों तक शुद्ध पाया गया है। उन्होंने गणित पद-10 में स्थापित किया था कि 20,000 परिमाण के व्यास वाले वृत्त की परिधि का परिमाण 62,832 होगा। तदनुसार-

पाई =  $(62832)/(20000) = 3.1416$  इस सूत्र को उन्होंने निम्नांकित श्लोक के रूप में रखा था-

चतुरधिकम शतमष्टगुणम द्वासष्टीस्था सहस्रानाम् ।  
आयुतद्वय विषकम्भस्यासंनो वृत्त परिणाह ॥

अर्थात् 'सौ में चार जोड़कर आठ से गुणा करो और फिर उसमें 62,000 जोड़ कर उस वृत्त की परिधि प्राप्त होगी जिसके व्यास का परिमाण 20,000 है'।

उन्होंने गणित पद-6 में स्थापित किया कि किसी समकोण वाले त्रिभुज का क्षेत्रफल

(आधार × शीर्ष से लंब)/2

होता है तथा उसके ऊपर समरूप ठोस का आयतन (आधार के त्रिभुज का क्षेत्रफल × ठोस के शीर्ष से लंब)/2 के तुल्य होता है।

उनके द्वारा प्रतिपादित गणित पद-17 के अनुसार किसी समकोण त्रिभुज में विकर्ण का

वर्ग = आधार का वर्ग + लंब का वर्ग

इस सिद्धांत को आर्यभट्ट की शिष्य परम्परा के एक शिष्य प्रसिद्ध गणितज्ञ बौधायन ने सुलभसूत्र द्वारा प्रमाणित किया। इस प्रसिद्ध सूत्र के जनक आर्यभट्ट थे तथा इसके प्रमाणित करने वाले बौधायन थे पर दुर्भाग्य से हमारे स्कूलों और महाविद्यालयों में अभी भी इस सूत्र को पाईथागोरस प्रमेय के नाम से पढ़ाया जाता है।

आर्यभट्ट के गणित पद के नौवें श्लोक में प्रतिपादित किया गया था कि किसी वृत्त की परिधि के छठे भाग की जीवा उसके व्यास की आधी होती है। आधुनिक गणित तथा त्रिकोणमिति में इस सूत्र का व्यापक उपयोग किया जाता है। उनके गणित पद-11 द्वारा ज्या तथा कोज्या को बहुत आकर्षक ढंग से प्रतिपादित किया गया है।

तीसरी शताब्दी में बकशाली ग्रंथों में प्रारंभ हुए स्थान-मान-तंत्र को आर्यभट्ट ने अपनी रचनाओं में बहुत विकसित किया। यद्यपि उन्होंने शून्य के चिन्ह का प्रयोग अपनी रचनाओं में नहीं किया परंतु फ्रांसीसी गणितज्ञ जार्ज इफराह ने तर्कों द्वारा सिद्ध किया है कि शून्य तथा दसमलव-स्थान-मान तंत्र का पूर्ण ज्ञान आर्यभट्ट की रचनाओं में उपलब्ध है। वास्तव में आर्यभट्ट ने अपनी रचनाओं में ब्राह्मी संख्याओं का प्रयोग नहीं किया था। उन्होंने वैदिक काल से चले आ रहे संस्कृत-प्रचलन का पालन करते हुए संख्याओं को दर्शाते अंकों के स्थान पर अक्षरों का प्रयोग किया था। इस प्रकार उन्होंने ज्या और कोज्या सारिणी को स्मरणकारी रूप में प्रदर्शित किया था।

iii) कालक्रिया पद : इसमें समय की प्रकृति और इसके मापन पर आर्यभट्ट द्वारा रचित पच्चीस श्लोक हैं जिनमें समय मापन के दीर्घ और अति लघु दोनों प्रकार के मात्रको को प्रतिपादित किया गया है-

वर्ष द्वादश मासास्त्रिंशमदिवसो भवित स मासस्तु।  
शस्तिनडियो दिवस शस्तिस्तु विनाडिक नाडी॥

तथा

गर्वक्षराणी शस्तिविरनाडीकाक्षी शदेव वा प्राणः।  
एवम काल विभागः क्षेत्रविभागस्था भगनात् ॥

iv) गोल पद : इसमें मुख्यतः पचास श्लोक हैं जिनमें पृथ्वी के गोल होने को, इसके अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूर्णन को तथा इसके सूर्य के चारों ओर घूमने को प्रतिपादित किया गया है। इसके अतिरिक्त इन पदों में सूर्य तथा इसके चारों ओर ग्रहों की गति का भी विस्तृत उल्लेख है जिस से स्पष्ट है कि न्यूटन से लगभग डेढ़ हजार साल पहले आर्यभट्ट को ग्रहीय गति तथा गुरुत्वाकर्षण बल का पूर्ण ज्ञान था। इस तथ्य के आलोक में हमारे विद्यालयों में सुनाई जाने वाली न्यूटन के सर पर सेब गिरने पर उन्हें सबसे पहले गुरुत्वाकर्षण का ज्ञान होने की कहानी मिथ्या तथा मनगढ़ंत है।

आर्यभट्ट द्वारा सूर्य-ग्रहण तथा चंद्र-ग्रहण का विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया था। उन्होंने बताया था कि सभी ग्रह तथा चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करके चमकते हैं और चंद्र ग्रहण उसपर पृथ्वी की छाया पड़ने के कारण दिखाई पड़ता है तथा सूर्यग्रहण पृथ्वी पर चन्द्रमा की छाया पड़ने के कारण दिखाई पड़ता है।

आर्यभट्ट तथा उनके शिष्यों द्वारा स्थापित कैलेंडर गणनाएं भारत में पंचांग रचना हेतु व्यापक रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। इस्लामिक देशों में भी उनका प्रयोग जलाली कैलेंडर बनाने के लिए 1073 ई. में उमर खयाम आदि खगोलविदों द्वारा प्रारंभ कर दिया गया था।

आर्यभट्ट को बीजगणित का संस्थापक भी माना जाता है तथा बीजगणित की विधि से गणित की जटिल समस्याओं को हल करने की कला उनके द्वारा रचित कई श्लोकों में प्रकट होती है जैसे आर्यभट्ट गणित पद-24 और 29 में जटिल गणितीय प्रश्न को बीजगणित विधि द्वारा हल किया गया है।

यद्यपि उनकी अन्य पुस्तक आर्य - सिद्धांत मूल रूप में उपलब्ध नहीं है परंतु उनके शिष्य परम्परा के वैज्ञानिकों के लेखों और पुस्तकों में इस पुस्तक को खगोलीय गणनाओं हेतु मार्ग दर्शक माना गया है। आर्यभट्ट ने सापेक्षता सिद्धांत का भी अपनी रचनाओं में उल्लेख किया है। जैसे-जैसे आगे जाती नौका में बैठा दर्शक किनारे की वस्तुओं

को पीछे जाते देखता है उसी प्रकार स्थिर नक्षत्र पृथ्वी वासी को पश्चिम की ओर जाते दिखाई देते हैं।

आर्यभट्ट द्वारा खगोल विज्ञान पर रचित तीसरी महत्वपूर्ण पुस्तक भी मूलरूप में उपलब्ध नहीं है परंतु नौवीं शताब्दी में किया गया इसका अरबी में अनुवाद श.स-दंदिशे खगोलीय ज्ञान का भंडार माना जाता है जिसका उल्लेख पर्शियन विद्वान अबु रेहान एल- ब्रूनी ने कई लेखों और पुस्तकों में किया है।

आर्यभट्ट ने अपनी सभी रचनाओं में उल्लेख किया है कि जो भी उन्होंने लिखा है वह सारा ज्ञान उनसे प्राचीन भारतीय विद्वानों के किये गये शोध पर आधारित है। अपनी रचनाओं में कई स्थानों पर उन्होंने 1200 ईसा पूर्व (लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व) महर्षि लगध द्वारा रचित वेदांग ज्योतिष में प्रतिपादित गणितीय सूत्रों का भी उल्लेख किया है। इस से सिद्ध होता है कि पश्चिम में मानव सभ्यता विकसित होने से पूर्व ही प्राचीन भारत में गणित और विज्ञान बहुत विकसित हो गए थे।

आर्यभट्ट की 550 ई. में मृत्यु के कई शताब्दी बाद इनके द्वारा संस्कृत श्लोकों में रचित खगोलीय गणित के ग्रंथों का 800 ई. में अरबी में अनुवाद हुआ था जिसके आधार पर इस्लामिक खगोलीय गणित का उदय हुआ और बाद में इस ज्ञान का स्थानांतरण यूरोप में हुआ जिस से वैश्विक स्तर पर खगोलीय ज्ञान का प्रचार प्रसार हुआ।

उनके सम्मान में प्रथम भारतीय उपग्रह का नाम आर्यभट्ट-उपग्रह रखा गया। खगोल विज्ञान तथा खगोल-भौतिकी में उन्नत शोध हेतु नैनीताल (उत्तराखण्ड) में उन्हीं के नाम पर आर्यभट्ट शोध प्रयोग शाला (ARIES) स्थापित की गयी है।

आर्यभट्ट द्वारा रचित गणित तथा खगोल-विज्ञान संबंधित सूत्रों का उल्लेख तथा विस्तृत विवेचन मेरी नव प्रकाशित पुस्तक,

" Historical, Cultural and Scientific Heritages of India" में किया गया है जिसे प्रगति प्रकाशन मेरठ द्वारा प्रकाशित किया गया है।

# मानवीय विकास में 'सद्गुणों' का योगदान

(श्रीमद्भगवद्गीता व रामचरितमानस के विशेष सन्दर्भ में)

**डॉ** पूजा व्यास कृत पुस्तक 'मानवीय विकास में सद्गुणों का योगदान (श्रीमद्भगवद्गीता व रामचरितमानस के विशेष सन्दर्भ में)' समकालीन नैतिक संकटों के मध्य भारतीय दार्शनिक परम्परा के मूल्यबोध को पुनर्स्थापित करने का एक गंभीर और सार्थक प्रयास है। यह कृति इस मूल प्रश्न का उत्तर खोजती है कि तीव्र भौतिक प्रगति, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के युग में मानव के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का वास्तविक आधार क्या हो सकता है।

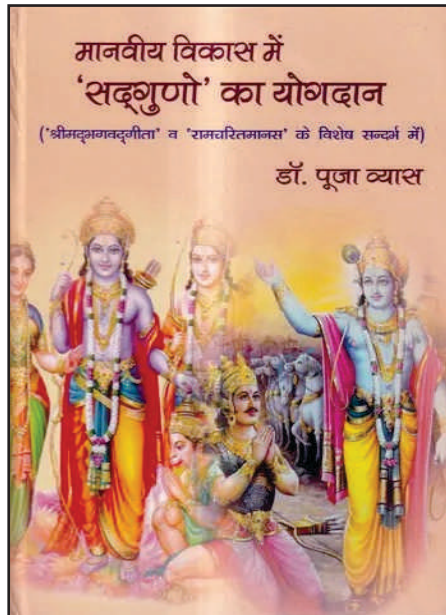
पुस्तक का आरम्भ समकालीन समाज में नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता और मूल्य-संकट की समस्या से होता है। लेखिका यह प्रतिपादित करती है कि आधुनिक मनुष्य भौतिक उपलब्धियों के मोह में अपने वास्तविक मानवीय स्वरूप से दूर होता जा रहा है। ऐसे समय में सद्गुण केवल व्यक्तिगत आदर्श नहीं, बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक विकास की अनिवार्य शर्त बन जाते हैं।

भारतीय नैतिक चिन्तन की जड़ों को खोजते हुए पुस्तक में वेद, उपनिषद, दर्शन-ग्रन्थ, स्मृतियाँ, पुराण, महाकाव्य तथा अन्य नीति-ग्रन्थों का व्यापक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। विशेषतः 'ऋत' की वैदिक अवधारणा को नैतिक व्यवस्था का मूल आधार मानते हुए लेखिका यह स्थापित करती है कि सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, करुणा और लोककल्याण जैसे सद्गुण भारतीय संस्कृति की आधारशिला हैं। उपनिषदों में वर्णित आन्तरिक पवित्रता तथा आत्मानुशासन को नैतिक जीवन का आवश्यक तत्त्व बताया गया है। इसी प्रकार जैन, बौद्ध और वैदिक दार्शनिक परम्पराओं का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि भारतीय दर्शन मूलतः आचारप्रधान दर्शन है, जिसका अंतिम लक्ष्य मनुष्य का नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष है।

पुस्तक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष श्रीमद्भगवद्गीता और रामचरितमानस का नैतिक दृष्टि से किया गया विश्लेषण है। लेखिका के अनुसार गीता केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि मानव व्यक्तित्व के रूपान्तरण का शाश्वत मार्गदर्शक है। अर्जुन के विषाद से लेकर कर्मयोग, निष्कामता, आत्मसंयम और दैवी सम्पदा तक का सम्पूर्ण विवेचन मनुष्य को सद्गुणी बनाने की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। इसी

प्रकार रामचरितमानस में भगवान राम के चरित्र के माध्यम से मर्यादा, सत्यनिष्ठा, करुणा, त्याग, कर्तव्यपरायणता और लोकमंगल जैसे मूल्यों की प्रतिष्ठा दिखाई गई है। तुलसीदास की प्रसिद्ध पंक्ति "जहां सुमति तहां संपति नाना, जहां कुमति तहां विपति निदाना" को लेखिका आधुनिक सामाजिक जीवन की समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

पुस्तक का एक अन्य महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि इसमें 'सद्गुणों' को केवल वैयक्तिक गुणों के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि व्यक्ति, समाज, राज्य, राष्ट्र और विश्व। इन पाँचों स्तरों पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। लेखिका का मानना है कि नैतिक विकास का वास्तविक उद्देश्य केवल आत्मकल्याण नहीं, बल्कि समष्टिगत कल्याण है। इसी कारण पुस्तक में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को वैश्विक नैतिकता के आधार के रूप में स्वीकार किया गया है।



लेखिका यह दर्शाती हैं कि आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने मनुष्य को बाह्य उपलब्धियों तक सीमित कर दिया है, जबकि वास्तविक विकास आन्तरिक मूल्यों के संवर्धन से सम्भव है। गीता के दैवी गुणों तथा रामचरितमानस के रामराज्य की अवधारणा को आधार बनाकर वे एक ऐसी मूल्यपरक आचार-संहिता का प्रतिपादन करती हैं जो वर्तमान वैश्विक समाज के लिए भी समान रूप से उपयोगी है।

कुल 334 पृष्ठों की यह पुस्तक भाषा की दृष्टि से पुस्तक सरल, प्रवाहपूर्ण और प्रभावशाली है। लेखिका ने दार्शनिक अवधारणाओं को सहज रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। समग्रतः यह कृति भारतीय नैतिक दर्शन, मूल्य-शिक्षा तथा मानवीय विकास के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है, जो यह स्थापित करती है कि सद्गुण ही वह आधार हैं जिन पर व्यक्ति, समाज और सम्पूर्ण मानवता का स्थायी एवं सार्थक विकास संभव है। इस दृष्टि से यह पुस्तक केवल एक दार्शनिक अध्ययन नहीं, बल्कि समकालीन मानवता के लिए नैतिक पुनर्जागरण का एक सशक्त घोष भी है।

- समीक्षक : कुणाल कुमार शांडिल्य

# कुशल नेतृत्व और सही रणनीति से भारत बना 'दुनिया की फार्मेसी'



डॉ. शेखर सुमन  
नई दिल्ली

भारत अब दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका के औषधीय उद्योग को दिशा दे रहा है। अमेरिका के मैरीलैंड में 3 से 6 मई 2026 को आयोजित 'सेलेक्ट यूएसए इन्वेस्टमेंट समिट' में भारतीय कंपनियों ने अमेरिकी बाजार में 1.7 ट्रिलियन रुपये (20.5 बिलियन डॉलर) के इन्वेस्टमेंट की घोषणा की। इसमें निवेश का सबसे बड़ा हिस्सा भारतीय औषधीय उद्योग (फार्मास्युटिकल

सेक्टर) से आना है। भारतीय औषधीय कंपनियां अमेरिका में रिसर्च और डेवलपमेंट और दवा बनाने की सुविधाओं में लगभग 19.1 अरब डॉलर का निवेश करेगी। अमेरिका ने भारतीय कंपनियों के इस कदम को 'ऐतिहासिक क्षण' बताया।

भारतीय औषधीय उद्योग अब दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा औषधीय उद्योग बन चुका है। अब हम जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा

**इ**तिहास में एक कथा प्रचलित है कि जब बख्तियार खिलजी बीमार पड़ा था तब पूरे अरब के हकीम उसे ठीक नहीं कर पाये थे, लेकिन नालंदा विश्वविद्यालय के आचार्य राहुल श्रीभद्र की दवाई खाते ही वह स्वस्थ हो गया था। भारतीय औषधि की इस अदभुत क्षमता से वह बेहद प्रभावित हुआ था। यह वो समय था जब पूरी दुनिया में अरब साम्राज्य की तूती बोलती थी और भारत पर भी मुस्लिम शासकों का कल्लेआम जारी था। कहा जाता है कि बख्तियार खिलजी को इस भारतीय चिकित्सा और औषधीय क्षमता से इतनी ईर्ष्या हुई कि उसने नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट करने का आदेश दे दिया।

नालंदा विश्वविद्यालय के पतन के साथ ही भारत के ज्ञान परंपरा में ठहराव सा आ गया। पहले मुस्लिम शासकों और बाद में अंग्रेजों ने साम्राज्यवादी ज्ञान को भारत पर जबरन थोपने की कोशिश की। लेकिन करीब हजार साल के उस साम्राज्यवादी आतंकी बौद्धिकता को तोड़कर भारत ने अब कई क्षेत्रों में नया कीर्तिमान स्थापित कर लिया है। हम फिर से चिकित्सा और औषधीय (फार्मास्युटिकल) उद्योग में नेतृत्वकारी भूमिका में आ रहे हैं।

## SelectUSA Investment Summit

**A HISTORIC MILESTONE!**

A record **\$20.5 Billion** in investments in the United States from Indian companies celebrated at the 2026 SelectUSA Investment Summit.

**This is the highest ever from India.**

**Key highlights:**

- **\$19.1B in Pharma:** Strengthening U.S. R&D and drug manufacturing.
- **\$255M in Steel:** Modernizing critical U.S. industrial capacity.
- **\$1.1B in Expansion:** 12 companies launching new greenfield projects across the USA.

U.S. Mission India

वैश्विक आपूर्तिकर्ता हैं। दुनिया भर में 20 प्रतिशत से अधिक जेनेरिक दवाएं और 60 प्रतिशत से अधिक टीके (वैक्सीन) अब भारत सप्लाई करता है।

मीडिया के साथ बातचीत के दौरान, वाणिज्य विभाग के संयुक्त सचिव, श्री मोहित यादव ने उल्लेख किया कि पिछले 12 वर्षों में, भारतीय फार्मास्युटिकल क्षेत्र एक रणनीतिक क्षेत्र और राष्ट्रीय गौरव के स्रोत के रूप में उभरा है। भारत को आज व्यापक रूप से 'दुनिया की फार्मसी' के रूप में मान्यता प्राप्त है, यह एक ऐसी प्रतिष्ठा है जो बड़े पैमाने पर उत्पादन, गुणवत्ता, सामर्थ्य और विश्वसनीय आपूर्ति के माध्यम से अर्जित की गई है। यह क्षेत्र 2014 के लगभग 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2026 में लगभग 60 बिलियन अमेरिकी डॉलर का हो गया है और 2030 तक इसके 130 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है। भारत का फार्मास्युटिकल निर्यात वित्त वर्ष 2015 के 14 बिलियन अमेरिकी डहलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2026 में लगभग 31 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है, जिसने 7.4 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) दर्ज की है, अब 2030 तक 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का लक्ष्य है।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कम लागत होना भारत की सबसे बड़ी ताकत है। भारतीय जेनेरिक दवाओं ने दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए इलाज तक पहुँच को संभव बनाया है। भारत वॉल्यूम के हिसाब से दवाओं का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, वैश्विक जेनेरिक दवाओं की मांग का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा आपूर्ति करता है और 200 से अधिक देशों में दवा उत्पादों का निर्यात करता है। भारत के दवा निर्यात का 60 प्रतिशत से अधिक हिस्सा कड़े नियामक बाजारों में जाता है।

भारत सरकार के कुशल नेतृत्व ने इस उद्योग को एक नयी दिशा दी है। औषधीय उद्योग के लिए 'प्रोडक्शन लिंकड इंसेंटिव



**भारत अब दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका के औषधीय उद्योग को दिशा दे रहा है। अमेरिका के मैरीलैंड में 3 से 6 मई 2026 को आयोजित 'सेलेक्ट यूएसए इन्वेस्टमेंट समिट' में भारतीय कंपनियों ने अमेरिकी बाजार में 1.7 ट्रिलियन रुपये (20.5 बिलियन डॉलर) के इन्वेस्टमेंट की घोषणा की। इसमें निवेश का सबसे बड़ा हिस्सा भारतीय औषधीय उद्योग (फार्मास्युटिकल सेक्टर) से आना है।**

स्कीम' (PLI स्कीम) के तहत कुल मिलाकर 42,600 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश आया है। इस स्कीम से 3,43,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की बिक्री हुई है और 1.13 लाख से ज्यादा लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। इन पहलों ने घरेलू मैनुफैक्चरिंग को मजबूत किया है, आयात पर निर्भरता कम की है और 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को आगे बढ़ाते हुए दुनिया की औषधीय उद्योग (फार्मसी) के तौर पर भारत की स्थिति को और मजबूत किया है।

औषधीय (फार्मास्युटिकल) उद्योग के बढ़ते कदम का लाभ भारत के आम जनता को भी मिल रहा है। रसायन और उर्वरक मंत्रालय के तहत फार्मास्युटिकल्स विभाग के अनुसार, प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना का विस्तार 2014 में लगभग 84

जन औषधि केंद्रों से बढ़कर 2026 तक पूरे देश में 19,200 से ज्यादा केंद्रों तक हो गया है। विभाग ने यह भी कहा कि इस पहल से लोगों को किफायती दामों पर अच्छी क्वालिटी की जेनेरिक दवाएं मिली हैं और नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाले खर्च में 40 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की बचत करने में मदद मिली है।

भारत की यह उपलब्धि आम नहीं है क्योंकि कोविड के दौरान औषधीय उद्योग ने न केवल लाखों भारतीयों की जान बचाई बल्कि पड़ोसी देशों का विश्वास भी जीता। हमें इस दिशा में और अधिक निवेश और इनोवेशन पर ध्यान केंद्रित करना होगा ताकि 'दुनिया की फार्मसी' दुनिया के सभी लोगों को अच्छी क्वालिटी की सस्ती दवा उपलब्ध करा सके।



# कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और विकसित भारत का लक्ष्य

‘भारत केवल AI का उपयोगकर्ता नहीं, AI का भविष्य गढ़ने वाला देश है। इस युग का नेतृत्व भारत करेगा।’



अभय श्रीवास्तव  
एआई विशेषज्ञ एवं लेखक

**क**ल्पना कीजिए कि उत्तर प्रदेश के किसी छोटे कस्बे का एक विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से विश्वस्तरीय शिक्षा प्राप्त कर रहा है; एक युवा उद्यमी AI की सहायता से किसानों की समस्याओं का समाधान विकसित कर रहा है; और एक शोधकर्ता भारतीय भाषाओं के लिए ऐसा मॉडल बना रहा है जिसे विश्व उपयोग कर रहा है। यह कोई

भविष्य की कल्पना नहीं, बल्कि उभरते भारत की वास्तविकता है।

मानव सभ्यता के इतिहास में कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं जो केवल तकनीक नहीं बदलते, बल्कि समाज, अर्थव्यवस्था और राष्ट्रों की दिशा भी बदल देते हैं। अठारहवीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति, बीसवीं शताब्दी की सूचना क्रांति और इक्कीसवीं शताब्दी की कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence AI) ऐसी ही परिवर्तनकारी शक्तियां हैं। आज AI केवल कंप्यूटर विज्ञान का विषय नहीं रह गई है; यह कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, बैंकिंग, रक्षा, शासन और अनुसंधान के प्रत्येक क्षेत्र में नए अवसरों का द्वार खोल रही है।

इस परिवर्तन के केंद्र में कौन होगा? विशाल पूँजी वाले राष्ट्र, बड़ी कंपनियाँ या अत्याधुनिक मशीनें? आंशिक रूप से हाँ,

लेकिन निर्णायक भूमिका उस युवा पीढ़ी की होगी जो इस तकनीक को समझेगी, विकसित करेगी और समाज के हित में उसका उपयोग करेगी। यही कारण है कि AI और युवा चेतना का संबंध केवल तकनीकी विकास का विषय नहीं, बल्कि विकसित भारत के निर्माण का भी प्रश्न है।

**AI का युग : भारत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर :** आज विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं AI को रणनीतिक शक्ति के रूप में देख रही हैं। वैश्विक आर्थिक मंच (World Economic Forum) ने बार-बार इस बात पर बल दिया है कि भविष्य की प्रतिस्पर्धा केवल संसाधनों या पूँजी की नहीं होगी, बल्कि ज्ञान, नवाचार और कौशल की होगी। AI इस प्रतिस्पर्धा का केंद्र बन चुकी है। भारत ने भी इस दिशा में

महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। India AI Mission के माध्यम से देश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए अनुसंधान, कम्प्यूटिंग क्षमता, कौशल विकास और नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना आधार, UPI, डिजिलॉकर और डिजिटल भुगतान व्यवस्था पहले ही विश्व के लिए एक मॉडल बन चुकी है। अब लक्ष्य है कि भारत AI के क्षेत्र में भी अपनी स्वतंत्र और विशिष्ट पहचान स्थापित करे। आज से दस वर्ष पहले भारत आईटी सेवाओं की शक्ति माना जाता था। आज भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वैश्विक प्रतिभा-शक्ति के रूप में उभर रहा है। AI विशेषज्ञों, डेटा वैज्ञानिकों, मशीन लर्निंग इंजीनियरों और शोधकर्ताओं की माँग अभूतपूर्व गति से बढ़ रही है।

**युवा शक्ति : उपभोक्ता नहीं, सृजनकर्ता बनने का**

**समय :** आज का युवा AI का उपयोग कर रहा है। वह सीख रहा है, शोध कर रहा है, सामग्री तैयार कर रहा है और नई संभावनाओं को खोज रहा है। लेकिन विकसित भारत के लिए इतना पर्याप्त नहीं है। भारत को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो AI के उपभोक्ता नहीं, बल्कि सृजनकर्ता बनें। विश्व की प्रमुख तकनीकी कंपनियों का नेतृत्व भारतीय मूल की प्रतिभाएं कर रही हैं। सुंदर पिचाई, सत्य नडेला और अरविंद कृष्णा जैसे नाम इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय मस्तिष्क वैश्विक स्तर पर नेतृत्व करने में सक्षम हैं।

भारत की भाषाई विविधता उसकी सबसे बड़ी सांस्कृतिक शक्तियों में से एक है। लंबे समय तक अधिकांश AI प्रणालियाँ अंग्रेजी-केंद्रित रहीं। आज BharatGen, Sarvam AI और अन्य भारतीय प्रयास हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित कर रहे हैं। यह केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि ज्ञान के लोकतंत्रीकरण और भाषाई आत्मनिर्भरता की

दिशा में महत्वपूर्ण कदम है

**भारतीय दृष्टि : तकनीक के साथ नैतिकता और संस्कृति :** कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें जानकारी दे सकती है, परंतु प्रज्ञा नहीं; गति दे सकती है, परंतु दिशा नहीं; क्षमता दे सकती है, परंतु चरित्र नहीं। दिशा, विवेक और नैतिकता मनुष्य से आती है। यही वह क्षेत्र है जहाँ भारत विश्व को एक महत्वपूर्ण दृष्टि प्रदान कर सकता है।

भारतीय संस्कृति ने सदैव ज्ञान को लोकमंगल से जोड़ा है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे आदर्श केवल दार्शनिक कथन नहीं हैं; वे मानव-केंद्रित विकास के सिद्धांत हैं। AI का उपयोग यदि

**सुंदर पिचाई का एक विचार यहाँ विशेष रूप से प्रासंगिक है - "Artificial Intelligence is one of the most profound things humanity is working on-"**

**यदि यह तकनीक इतनी गहन और प्रभावशाली है, तो भारत के युवाओं को केवल दर्शक बने रहने का अधिकार नहीं है। उन्हें इस परिवर्तन के सक्रिय भागीदार बनना होगा।**

केवल लाभ कमाने या प्रतिस्पर्धा जीतने के लिए किया जाएगा, तो उसके दुष्परिणाम भी सामने आ सकते हैं। लेकिन यदि इसका उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण और सामाजिक समावेशन के लिए किया जाए, तो यह मानवता के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की प्रसिद्ध AI Index Report बार-बार यह संकेत देती रही है कि AI का प्रभाव केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक भी होगा। इसलिए भविष्य उन्हीं समाजों का होगा जो तकनीकी दक्षता के साथ उत्तरदायित्व और नैतिकता को भी विकसित करेंगे। यही भारत की सांस्कृतिक शक्ति है विज्ञान और मूल्य, नवाचार और संवेदना, प्रगति और मानवता का संतुलन।

**विकसित भारत की दिशा में युवा संकल्प :** स्वतंत्रता के बाद भारत ने अनेक चुनौतियों को अवसरों में बदला है। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, अंतरिक्ष कार्यक्रम, डिजिटल क्रांति और स्टार्टअप क्रांति इसके उदाहरण हैं। अब समय AI क्रांति को भारत के विकास की नई शक्ति बनाने का है।

इसके लिए आवश्यक है कि युवा केवल रोजगार की तैयारी न करें, बल्कि समस्या समाधान की क्षमता विकसित करें; केवल डिग्री प्राप्त न करें, बल्कि सतत सीखने की प्रवृत्ति अपनाएं; केवल व्यक्तिगत सफलता न खोजें, बल्कि राष्ट्रीय विकास में अपनी भूमिका भी पहचानें। भारत की वास्तविक शक्ति उसके प्राकृतिक संसाधनों में नहीं, बल्कि उसके युवाओं की चेतना में निहित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें अभूतपूर्व तकनीकी सामर्थ्य प्रदान कर रही है, परंतु उस सामर्थ्य का उपयोग किस दिशा में होगा, यह युवा पीढ़ी तय करेगी।

यदि भारत का युवा आधुनिक विज्ञान को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहे, यदि वह नवाचार को आत्मनिर्भर भारत के संकल्प से जोड़े, यदि वह तकनीकी उत्कृष्टता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व को भी महत्व दे, तो भारत केवल AI महाशक्ति नहीं बनेगा वह मानव-केंद्रित विकास का वैश्विक आदर्श बनेगा। यंत्रों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता दी जा सकती है, परंतु राष्ट्रों को महान बनाने वाली शक्ति सदैव जागृत युवा चेतना ही होती है। युवा यदि AI को केवल करियर नहीं, बल्कि कर्तव्य के रूप में देखें, तो भारत 21वीं सदी में ज्ञान, तकनीक और मानवता का वैश्विक नेतृत्व कर सकता है।

AI का उद्देश्य मनुष्य का स्थान लेना नहीं, बल्कि उसकी क्षमता, उत्पादकता और सृजनशीलता को बढ़ाना होना चाहिए, और जब युवा चेतना, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आत्मनिर्भरता का संकल्प और भारतीय संस्कृति का आलोक एक साथ आगे बढ़ते हैं, तब केवल विकास नहीं होता एक नई सभ्यता का निर्माण होता है। 'चरैवेति, चरैवेति।'

# युवा उपलब्धि का प्रेरक उदाहरण

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनसे मिलते ही उनके संस्कार, विनम्रता और उत्कृष्टता की झलक दिखाई देने लगती है। आदित्य उन्हीं युवाओं में से एक हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा, ज्ञान और कर्मनिष्ठा के बल पर न केवल अपने क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाई है, बल्कि अनेक युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बने हैं। हाल ही में प्राप्त उनके महत्वपूर्ण सम्मान ने उनकी उपलब्धियों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। श्रीमती शिवानी चतुर्वेदी ने आदित्य से विशेष बातचीत की और उनके जीवन, संघर्ष, सफलताओं, कार्यक्षेत्र तथा भविष्य के दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया। प्रस्तुत हैं उस प्रेरक संवाद के प्रमुख अंश।

आदित्य जी, अपनी शैक्षणिक यात्रा के बारे में बताइए।

मैंने इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बी. टेक. किया। कॉलेज के दिनों में मैं कॉलेज की द्विवार्षिक पत्रिका का मुख्य संपादक भी रहा। तकनीकी ज्ञान को और गहरा करने के लिए मैंने आईआईटी दिल्ली से रेडियो फ्रीक्वेंसी में छह माह का विशेष पाठ्यक्रम भी किया।

बी.टेक. के बाद आपने कौन-सा मार्ग चुना?

इंजीनियरिंग के बाद मैंने मार्केटिंग में एमबीए किया। एमबीए के दौरान कई ट्राइमेस्टर्स में प्रथम स्थान प्राप्त किया। मैंने आईएमटी गाज़ियाबाद में सर्वोच्च जीमैट स्कोर प्राप्त किया, जिसके लिए विभिन्न प्रतिष्ठित मंचों पर मुझे बहुत सराहना मिली। इसके अतिरिक्त, मार्केटिंग टेक्नोलॉजी (MarTech) पर लिखे गए मेरे लेखों को भी कई पुरस्कार प्राप्त हुए।

आप अपने करियर के विषय में हमें कुछ बताइए।

एमबीए के बाद मैंने कॉग्निजेंट में बिजनेस डेवलपमेंट टीम के साथ कार्य किया। कोविड-19 जैसे चुनौतीपूर्ण समय में भी मैंने अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। बाद में मैंने अपने पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ने का निर्णय लिया।

अपने पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ने की कोई खास वजह?

नहीं, कुछ खास वजह तो नहीं थी। पर



‘15A Chronicle’ के संपादक के रूप में उन्होंने नियमित रूप से ऐसे लेख लिखे, जिनमें वित्त, मार्केटिंग और समसामयिक विषयों पर उनकी गहरी समझ परिलक्षित होती थी। उनकी लेखनी ने न केवल पाठकों को जानकारी प्रदान की, बल्कि उन्हें नए दृष्टिकोण से सोचने के लिए भी प्रेरित किया।

पहले मेरे पापा अपने भाइयों के साथ संयुक्त व्यवसाय में थे। परंतु जब सब अलग हुए, तो पापा के ऊपर बहुत काम आ गया था। तब मैंने सोचा कि मुझे पापा की सहायता के लिए उनके पास होना चाहिए।

आप और आपके पिताजी किस व्यवसाय से जुड़े हुए हैं?

मैं अपने पिता के साथ एम/एस

यूआईसी एवियोटेक एंटरप्राइजेज के नाम से एक कंपनी का संचालन करता हूँ। हमारी कंपनी एयरक्राफ्ट रिफ्यूल्स तथा ग्राउंड एवं पैसेंजर सपोर्ट इक्विपमेंट के निर्माण के क्षेत्र में कार्यरत है और भारतीय रक्षा सेवाओं तथा विमानन क्षेत्र को सेवाएं प्रदान करती है।

कंपनी के विकास में आपका क्या योगदान रहा है?

मैंने नए ग्राहकों को जोड़ने, उत्पाद शृंखला का विस्तार करने, विदेशी आपूर्तिकर्ताओं के साथ व्यावसायिक संबंध विकसित करने तथा गुणवत्ता नियंत्रण को और अधिक सुदृढ़ बनाने पर विशेष ध्यान दिया। इन प्रयासों से कंपनी की कार्यक्षमता और प्रतिष्ठा, दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

**आपकी उपलब्धियों के लिए आपको कौन-से सम्मान प्राप्त हुए हैं?**

मेरी उद्यमशीलता और भारतीय सेना के कार्यों में परोक्ष योगदान हेतु चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) एवं चीफ ऑफ इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ (CISC) द्वारा मुझे “यंग एंटरप्रेन्योर अवार्ड” से सम्मानित किया गया। यह सम्मान मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा है।

**सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में आपकी क्या भूमिका है?**

जब तक पढ़ाई चल रही थी, तब तक बाकी किसी भी चीज पर मेरा ध्यान नहीं गया था। किंतु अंदर देश के लिए कुछ करने की भावना थी। पर समझ में नहीं आता था कि स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए क्या करना चाहिए और क्या कर सकते हैं? मुझे लगता है कि आज हमारे अधिकांशतः युवाओं के समक्ष यह प्रश्न है। वे दिशाहीन हैं। मेरा सौभाग्य था कि मुझे वर्ष 2024 में मुझे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ने का अवसर मिला।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ने के बाद मैंने वहां विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया और वर्तमान समय में मैं शाखा मुख्य शिक्षक के रूप में कार्य कर रहा हूँ। इसके अतिरिक्त, सेक्टर 15A में आयोजित दीपावली 2025 और महाशिवरात्रि 2026 जैसे आयोजनों के सफल संचालन में भी मेरी सक्रिय भूमिका रही है।

**लेखन और संपादन के क्षेत्र में आपकी रुचि कैसे विकसित हुई?**

लेखन और संपादन में शुरू से ही मेरी रुचि थी। मैं सेक्टर 15A की मासिक पत्रिका “द क्रॉनिकल्स ऑफ 15A” का संपादक भी रह चुका हूँ। लेखन के क्षेत्र में मार्केटिंग टेक्नोलॉजी मेरा प्रिय विषय है। इस विषय पर मेरे कई लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। नई तकनीकों पर लिखना मुझे विशेष रूप से पसंद है।

**आज के युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?**

मेरा मानना है कि सफलता का सबसे बड़ा आधार समय का सही और रचनात्मक उपयोग है। समय जीवन की सबसे मूल्यवान

होता है, तभी वास्तविक सफलता और संतुष्टि प्राप्त होती है।

इसके साथ ही, जीवन में आगे बढ़ने के लिए यह भी अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने समय और ऊर्जा को नष्ट करने वाले अनावश्यक विकर्षणों (Distractions) को पहचानें और धीरे-धीरे उन्हें अपने जीवन से दूर करें। यह एक ऐसी सीख है, जो अनुभव और समय के साथ विकसित होती है, लेकिन सफलता की यात्रा में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

**आप स्वस्थ रहने के लिए क्या करते हैं?**

स्वस्थ रहने के लिए मैं नियमित योग व ध्यान करता हूँ। प्राणायाम करता हूँ, जिससे शरीर के साथ-साथ मन भी स्वस्थ रहे और कार्य में ध्यान केंद्रित करना आसान हो।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इसलिए शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है। जहाँ तक संभव हो सकता है, मैं बाहर खाने से बचता हूँ।

**आपने कहा कि आप बाहर खाने से बचते हैं। इससे क्या तात्पर्य है?**

बाहर के खाने से मेरा मतलब है कि आजकल जो फास्ट फूड अथवा जंक फूड का प्रचलन है, मैं उससे बचता हूँ। घर का बना सादा भोजन, जैसे दाल, चावल, रोटी और सब्जी, पसंद करता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद, आदित्य। आपने प्रेरणा विचार पत्रिका के लिए समय निकाला। आपके उज्वल भविष्य के लिए प्रेरणा विचार पत्रिका की ओर से ढेरों शुभकामनाएँ। हम आशा करते हैं कि आपकी मेहनत, जीवनशैली और विचारों से अन्य युवा भी लाभान्वित होंगे।

पुनः धन्यवाद!

**आदित्य उन युवाओं में से हैं जिनके व्यक्तित्व में विनम्रता, संस्कार और आत्मविश्वास का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। सेक्टर 15A में निवास के दौरान उन्हें निकट से जानने वाले लोगों का मानना है कि बड़ों के प्रति सम्मान और सहज व्यवहार उनकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से हैं। कोविड काल के पश्चात जब सामाजिक गतिविधियाँ पुनः सामान्य हुईं, तब उनके कार्य और व्यक्तित्व के विविध आयाम अधिक स्पष्ट रूप से सामने आए।**

पूजी है, और इसका सदुपयोग ही व्यक्ति को निरंतर प्रगति की ओर ले जाता है।

संतुलित और समग्र विकास के लिए जीवन के पाँच महत्वपूर्ण स्तंभों पर समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। सभी युवाओं को इन पर ध्यान देना चाहिए।

जिसमें सबसे पहले आता है - स्वास्थ्य (मानसिक एवं शारीरिक, दोनों तरह का स्वास्थ्य), कार्यक्षेत्र, परिवार, सामाजिक जीवन और आध्यात्मिकता।

जब इन सभी क्षेत्रों में संतुलन स्थापित

## लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी)



रुवामी दयानंद सरस्वती ने कहा था 'भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों नहीं, उसकी पुत्रियों के प्रताप से स्थिर है। भारतीय स्त्रियों ने अपना धर्म छोड़ा होता तो यह कभी का नष्ट हो गया होता। यह कथन सौ प्रतिशत चरितार्थ होता है मौसी यानी लक्ष्मीबाई केलकर पर। बचपन में लोग उन्हें कमल नाम से पुकारते थे। हिंदू संस्कारों और राष्ट्र प्रेम से पल्लवित और पुष्पित वह बचपन से ही बाल गंगाधर तिलक के द्वारा प्रकाशित केसरी का पठन-पाठन करती थीं। इसी प्रभाव के चलते उन दिनों महाराष्ट्र में चल रहे गौ रक्षा आंदोलन अपने ओजस्वी भाषण से तरुण और युवाओं को जागरूक किया। उनका विवाह कम उम्र में अधिवक्ता पुरुषोत्तम राव के साथ हो गया। उसके पश्चात उनका नाम लक्ष्मी रखा गया। उन्होंने भारत के गौरव और स्त्री की अस्मिता का परिचय कराने का दृढ़ निश्चय किया। लड़कियां सुशिक्षित रहें इसके लिए वर्षों में पहली कन्या पाठशाला की स्थापना भी उन्हीं के द्वारा की गई। महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा पर अर्थात् भारतीय नववर्ष पर अपने घरों के बाहर भगवा ध्वज लगाने की परंपरा उन्होंने फिर से शुरू की। कालांतर में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यप्रणाली को देखा और उससे प्रभावित हुईं। वे संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से मिलीं और उनकी प्रेरणा से वर्ष 1936 विजयादशमी के दिन नागपुर में राष्ट्र सेविका समिति की नींव डाली। अनेक प्रकार की सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से यह समिति आज भी राष्ट्र की नारी शक्ति को गढ़ रही हैं। उनके द्वारा स्थापित राष्ट्र सेविका समिति आज विश्व के लगभग 25 से भी अधिक देशों में सक्रिय है। मौसी जी का जन्म 6 जुलाई, 1905 को नागपुर में हुआ था। इस तरह आजीवन सेवा करते हुए 27 नवम्बर, 1978 को मौसी जी का देहांत हो गया।

## स्वतंत्रता चेतना के अग्रदूत



बाल गंगाधर तिलक जिन्हें लोकमान्य तिलक के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक थे। उनका जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में हुआ। वे एक महान शिक्षाविद्, पत्रकार, समाज सुधारक और प्रखर राष्ट्रवादी

विचारक थे। उन्होंने शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से न्यू इंग्लिश स्कूल तथा डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने समाचार पत्र 'केसरी' (मराठी) और 'द मराठा' (अंग्रेजी) के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों का निर्भीक विरोध किया और भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया।

उनका प्रसिद्ध उद्घोष स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणादायक नारा बन गया। वर्ष 1908 में ब्रिटिश सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर उन्हें मांडले (बर्मा, वर्तमान म्यांमार) की जेल भेज दिया। कारावास के दौरान उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य की रचना की, जिसमें कर्मयोग और राष्ट्रधर्म की गहन व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

भारतीय जनता ने उनके अद्वितीय नेतृत्व और राष्ट्रसेवा के सम्मान में उन्हें लोकमान्य की उपाधि प्रदान की।

## अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शिल्पकार



अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को वैचारिक और जमीनी स्तर पर व्यापकता प्रदान करने में जैसे अनेक समर्पित लोगों का योगदान रहा है। लेकिन इस कार्य में मदनदास देवी का विशेष योगदान रहा है। क्योंकि प्रचारक के नाते उनकी विशिष्ट भूमिका रही। नौ जुलाई, 1942 को महाराष्ट्र में सोलापुर जिले के

करमाला गांव में जन्मे मदनदास जी अपने भाई के साथ बचपन से ही शाखा जाने लगे। बाद में उन्होंने प्रचारक बनकर अपना जीवन देश को समर्पित कर दिया। वह 1964 में विद्यार्थी परिषद के काम से जुड़े। पहले मुंबई, 1968 में पश्चिम क्षेत्र और फिर 1970 में वे राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनाये गये। यह जिम्मेदारी उन्होंने 22 साल तक संभाली। 1992 में उन्हें संघ में अ.भा. सह प्रचारक प्रमुख तथा 1993 में सह सरकार्यवाह की जिम्मेदारी भी मिली। उन्होंने 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में संघ और सरकार के बीच समन्वय का कठिन जिम्मेदारी भी निभायी। साल 2009 में उन्हें संघ की केंद्रीय कार्यकारिणी का सदस्य तथा दीनदयाल शोध संस्थान का संरक्षक भी बनाया गया। इस तरह परिषद को जमीनी और राष्ट्रीय स्तर प्रदान करते हुए 24 जुलाई, 2023 को बेंगलुरु में मदनदास जी का देहांत हो गया।

# परंपरा छूती बाल सुलभ कहानी



पूनम भटनागर  
लेखिका

**रा** मनगर सोसायटी का एक फ्लैट जो आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित था। इसमें रमेश जी और रत्ना देवी (दादाजी और दादीजी जी) थे। साथ ही उनका पुत्र और पुत्रवधू तथा दो बच्चे जो पौत्र तथा पौत्री थे। परिवार बड़े आनन्द पूर्वक अपने दिन गुजार रहा था। सोना और मोनू क्रमशः 10 और 8 की उम्र के थे। दादा, दादी के संरक्षण में पल रहे बच्चे जीवन मूल्यों के अधिक निकट होते हैं सो ये बच्चे भी आदत अनुसार किसी अच्छे गुण के लिए अपने दादा, दादी से चर्चा जरूर करते

सामान्य बच्चों की तरह ये भी दादी, नानी की कहानी से

जुड़े थे। दिन हो या रात एक कहानी तो सुनते ही थे, और बाल मन से उसको अपनाने की भी कोशिश करते थे।

आज भी दादा, दादी नाश्ता कर लाबी में बैठे थे। दादाजी अखबार पढ़ रहे थे और दादीजी क्रोशिया और धागे से बुनाई कर रही थी। तभी दोनों बच्चे आपस में बतियाते हुए उनके पास आते हैं।

मोनू - दादाजी आज हमारी बात का विषय क्या रहेगा।

दादाजी अखबार मेज पर रखते हुए कहते हैं, हां, बताओ तो क्या नया चल रहा है। तभी उसे फोन पर पाकर देखते हुए कहते हैं,

क्या तुम फोन के बिना जीवन की कल्पना आज-कल कर सकते हो।

नहीं दादाजी, मोबाइल तो आजकल के लिए जरूरी है। मोनू तपाक से बोला।

पर क्या बिना गूगल, यू ट्यूब, के भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

वह कैसे दादाजी, सोना पूजा की सजी थाल हाथ में लाते हुए उत्सुकता से बोली।

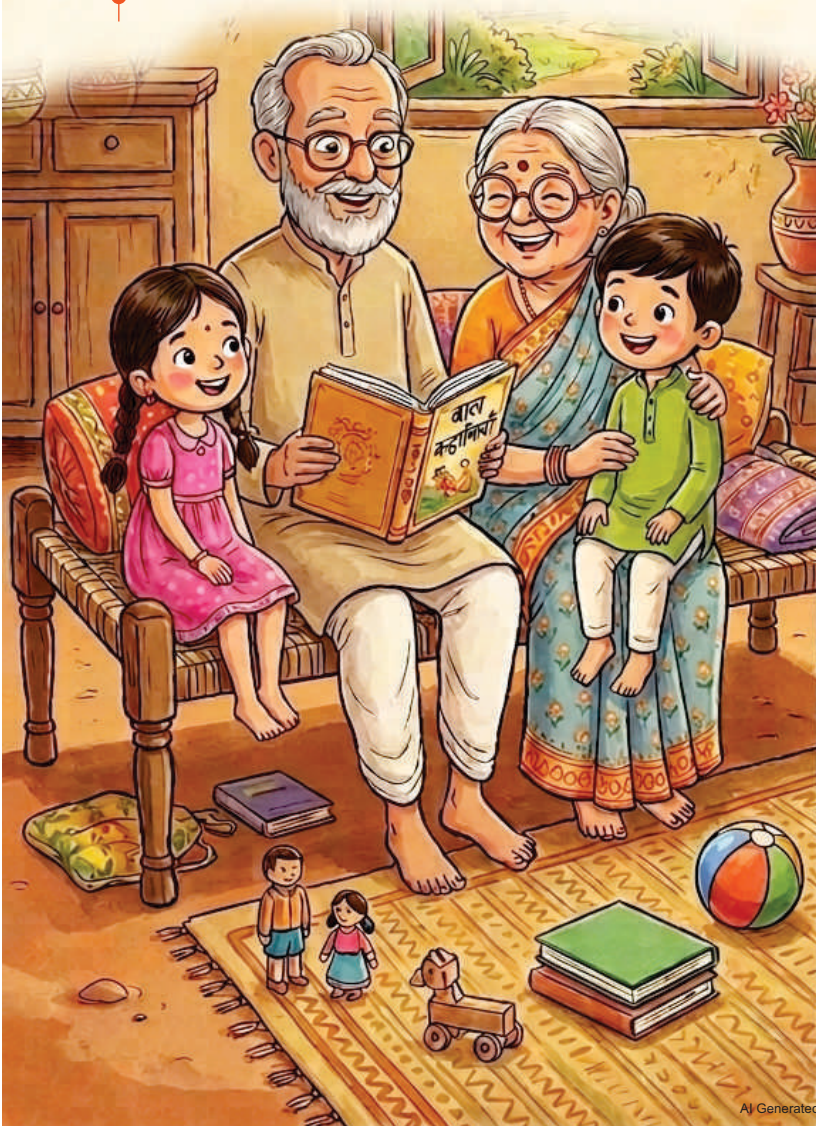
हमारी परंपराओं और कहानी के माध्यम से। पहले मोबाइल के साधन उपलब्ध नहीं थे। तब हम लोग इन्हीं परम्परागत कहानी के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते थे।

वो कैसे, दोनों एक स्वर में बोले।

अब दादी बोली तुमने (पूजा के थाल में दीया) घी, तेल का बनाया पर तुम्हें मालूम है, ये घी, तिल के तेल का ही दीया क्यों बनाते हैं। और पूजा मोमबत्ती से क्यों नहीं करते।

हां, हां दादी बताओं।

दादी क्रोशिया को सोचने की मुद्रा में लाते हुए बोली, पूजा आदिकाल से होती चली आ रही है। घी का दीपक जलाने से



वातावरण में सात्विक तरंगों, उत्पन्न होती है तथा मन अपने आराध्य की तरफ जाता है। दिव्य ऊर्जा आती है, मन शांत होता है, सुख समृद्धि लाने के लिए भी शुद्ध घी का दीपक, शनि देव आदि की पूजा के लिए तिल का तेल या सरसों का तेल उत्तम होता है, मोमबत्ती के अंदर की असात्विक ज्वलनशील पदार्थ निकलते हैं जो वातावरण को स्वच्छ वायु नहीं प्रदान करते, और ये विदेशी परंपरा का द्योतक है। यह सब हमें परम्परा से ही पता चलता है और इतना ही नहीं परंपरा का हमारे जीवन में और भी महत्व है, दादाजी कुर्सी सीधी करते हुए बोले।

दादाजी, परंपरा हमारे लिए क्यों आवश्यक है कुछ और भी बताओ।

परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही मान्यताओं, व्यवहार, रहन-सहन को दर्शाती है। यह अतीत के कार्य कलापों को वर्तमान से जोड़कर उनका मूल्यांकन करती है। परंपरा समुदाय की पहचान होती है, खान-पान, पहनावा, तीज त्यौहार से जड़ी होती है। परंपराएं एकाएक नहीं बदलती, पर समय और वस्तुस्थिति के अनुसार इसमें बदलाव आता है। यह सामाजिक दिशा देती है। लोगों में एकता और समरूपता लाती है।

भारत में ज्ञान और धार्मिक परम्परा चलन में है। लोग इनकी मान्यताओं के आधार पर चलते हैं।

तभी सोना बोली उठी कि हमें परम्परा पालन करते हुए कोई कहानी सुनाओ।

भयी, कहानी सुनाने का काम तो तुम्हारी दादी करती है।

हां, हां दादी, सुनाओ न हमें इसके ऊपर कोई कहानी।

दादी क्रोशिया नीचे रखते हुए बोली, तुम अभी पूजा का थाल सजा कर लाई और आज 'गुरु पूर्णिमा' भी है, तो आज की कहानी गुरु, शिष्य परंपरा की सुनाती हूं।

गुरु पूर्णिमा तो बच्चों तुम को मालूम ही है कि यह गुरु और शिष्य का त्यौहार है बाकी गुरु पूर्णिमा की तरह इस बार भी सारे शिष्य अपनी सामर्थ्य अनुसार गुरु जी के लिए कोई न कोई उपहार लाए। इस दिन की ऐसी परम्परा ही है। माधव एक कोने में खड़ा रो रहा था।

दादी, माधव कौन था, रो क्यों रहा था। मोनू ने व्यग्रता से पूछा।

माधव बाकी शिष्यों की तरह एक शिष्य था गुरुजी का। पर वो बहुत गरीब था। अब सारे शिष्यों ने अपने-अपने उपहार गुरुजी को दे दिए। पर माधव के पास तो कुछ भी नहीं था, देने के लिए, तभी वह बाहर की ओर से भाग कर एक साफ ढेला मिट्टी का ले आया। और रोते हुए गुरुजी के चरणों में रख कर बोला, बस गुरु जी यही है।

फिर सोना उदास होते हुए बोली 'दादी फिर क्या हुआ'।

दादी ने कहा, सारे शिष्य हंसने लगे और माधव का मजाक उड़ाते हुए बोले, ये तो मिट्टी है। इस पर गुरु जी ने उठकर रोते माधव को गले लगा लिया और कहा, आज का सबसे अच्छा उपहार 'ये मिट्टी का ढेला ही है'।

मोनू फिर बोला, वह कैसे दादी।

शिष्य भी एक स्वर में गुरु जी से यही बोले।

तब गुरुजी ने बताया कि जो उपहार तुम लाए हो वह तो तुम्हारी तिजोरी से आए हैं, पर ये जो लाया है मेहनत, पूरी श्रद्धा और लगन से लाया है।

पर इससे परंपरा का पता कैसे चला, दादी, मोनू ने प्रश्न किया।

परंपरा का निर्वाह उसने माटी का ढेला लाकर दिया, क्यों कि भारत में मिट्टी को भारत मां माना गया है और मां का सम्मान हम पांव छूकर करते हैं। यही पूजनीय माटी वह गुरु के लिए लाया। अपने देश की माटी का सम्मान कर देश भक्ति परम्परा को निभाया। अहंकार का त्याग किया। धन से खरीदा उपहार कहीं न कहीं अहंकार को जन्म देता है। पूर्ण श्रद्धा से दे कर भाव परंपरा का निर्वाह किया। शबरी के बेर, और सुदामा के तंदुल का उदाहरण है, जिसमें भाव प्रधान है

और इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए 'गुरु शिष्य परंपरा' का भी पता चलता है। गुरु को भगवान से भी ऊंचा स्थान दिया गया है। तभी तो इसी परंपरा के तहत कहा गया है कि-

गुरु, गोविंद दोउ खड़े, कांके लागूं पाय

बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो मिलाया।

इससे हम 'परंपरा संकल्प' भी ले सकते हैं अपने से बड़ों का आदर करेंगे। रोज उठकर बड़ों के चरण स्पर्श करेंगे। किसी व्यक्ति की सहायता के लिए मना नहीं करेंगे

मन में देश भक्ति की भावना रखेंगे। अभिमान की भावना नहीं रखेंगे। सबसे सहयोग से रहेंगे, संयमित व्यवहार करेंगे।

परंपराएं और कहानियां हमारी संस्कृति की रीढ़ होती है। परंपराओं का निर्वाह कहानियों के माध्यम से ही होता है। इससे हमें संस्कृति की प्रेरणा मिलती है। अपनी संस्कृति के बारे में पता चलता है।

ज्ञान में वृद्धि होती है एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचने का रास्ता है। रीति रिवाज और धार्मिक चीजों का पता चलता है, कहानियां परंपराओं की 'सुरीली आवाज' है। अगर कहानियां न हो तो परंपराएं इतिहास के नीचे दब कर खो जाएं। जिस पेड़ की जड़ें जितनी गहरी होती है, वह उतनी ही मजबूती से खड़ा रहता है, उसी तरह जो बच्चा परंपरा और बड़ों के संस्कारों से जुड़कर काम करता है, उतना ही सफल होता है।

दादी, आज की ये शिक्षा हम याद रखेंगे।

# बेलूर का चेन्नकेशव मंदिर

## भारतीय स्थापत्य और शिल्पकला का अनुपम वैभव



उमानाथ त्रिपाठी

स्वतंत्र लेखक, कवि, समीक्षक एवं साहित्यकार

**भा**रत विश्व की उन प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जहां धर्म, दर्शन, कला और स्थापत्य का अद्भुत विकास हुआ। भारत के प्राचीन मंदिर केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक परंपरा, स्थापत्य-कौशल और ऐतिहासिक वैभव के जीवंत प्रतीक भी हैं। इन मंदिरों की भव्यता, कलात्मकता और आध्यात्मिक ऊर्जा आज भी विश्व को आकर्षित करती है।

यदि भारत की आत्मा को समझना हो तो उसके मंदिरों की ओर दृष्टि करनी होगी। ये मंदिर केवल पत्थरों से निर्मित भवन नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन, आध्यात्मिक साधना, सांस्कृतिक वैभव और राष्ट्रीय अस्मिता के सजीव प्रतीक हैं। इनकी शिलाओं में इतिहास बोलता है, मूर्तियों में दर्शन साकार होता है और स्थापत्य में भारतीय प्रतिभा की अनुपम छाप दिखाई देती है।

भारत के प्राचीन मंदिर हमारी सभ्यता की आत्मा हैं। वे केवल धार्मिक स्मारक नहीं, बल्कि इतिहास, कला, विज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिकता के भव्य प्रतीक हैं। अनेक आक्रमणों, प्राकृतिक आपदाओं और कालचक्र की मार सहने के बाद भी ये मंदिर आज गर्व से खड़े हैं और आने वाली पीढ़ियों को अपनी गौरवशाली विरासत का स्मरण कराते हैं।

अयोध्या, काशी, मथुरा, कोणार्क, खजुराहो, सोमनाथ, बृहदेश्वर, जगन्नाथपुरी और रामेश्वरम् जैसे मंदिर भारतीय संस्कृति की गौरवशाली पहचान हैं। इन्हीं अनुपम धरोहरों में कर्नाटक का बेलूर स्थित चेन्नकेशव मंदिर भी भारतीय स्थापत्य कला का एक अद्वितीय रत्न है।



1116 ईस्वी में होयसला वंश के महान सम्राट विष्णुवर्धन द्वारा आरंभ कराया गया यह मंदिर तीन पीढ़ियों और लगभग 103 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद पूर्ण हुआ। सोपस्टोन (स्टियाटाइट) पत्थरों से निर्मित यह मंदिर अपनी ताराकार संरचना, सूक्ष्म नक्काशी और अद्भुत शिल्पकला के लिए विश्वविख्यात है।

मंदिर की बाहरी दीवारों पर रामायण, महाभारत, देवी-देवताओं, नृत्यांगनाओं, संगीतकारों, पशु-पक्षियों और लोकजीवन के अनगिनत दृश्य अत्यंत जीवंत रूप में अंकित हैं। हाथियों की विशाल शृंखलाएं, अलंकृत स्तंभ, कलात्मक छतें और बारीक मूर्तिकला

उस युग के शिल्पकारों की असाधारण प्रतिभा का परिचय देती हैं। मंदिर परिसर में स्थित 'विष्णु समुद्र' नामक विशाल पुष्करणी तथा भगवान विष्णु के चरणचिह्नों से जुड़ी मान्यताएँ इसकी धार्मिक महत्ता को और बढ़ाती हैं।

भारत के प्राचीन मंदिरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल ईंट-पत्थरों की संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि उनमें उस युग की वैज्ञानिक समझ, गणितीय दक्षता, कलात्मक संवेदना और आध्यात्मिक दृष्टि का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। आज भी इन मंदिरों की वास्तुकला आधुनिक अभियंताओं, वास्तुविदों और शोधकर्ताओं को आश्चर्यचकित करती है।

विदेशी आक्रमणों, प्राकृतिक आपदाओं और समय के प्रहारों के बावजूद भारत के अनेक प्राचीन मंदिर आज भी अपनी भव्यता के साथ खड़े हैं। वे हमारी सांस्कृतिक जड़ों, राष्ट्रीय गौरव और सनातन परंपरा के अमर प्रतीक हैं। इनका संरक्षण केवल पुरातात्विक दायित्व नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है।

प्राचीन मंदिर हमें यह संदेश देते हैं कि सभ्यता की वास्तविक पहचान उसके भौतिक वैभव में नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, संस्कृति, कला और आध्यात्मिक मूल्यों में निहित होती है। यही कारण है कि भारत के मंदिर आज भी श्रद्धा, प्रेरणा और गौरव के शाश्वत केंद्र बने हुए हैं।

बरबस ही ये काव्यात्मक पंक्तियां वाणी पर आ जाती हैं-

मंदिर केवल पत्थर नहीं, संस्कृति की पहचान हैं,  
इनमें बसते राष्ट्रधर्म के अमिट दिव्य सम्मान हैं।  
पीढ़ियां बदलें, युग बदलें, पर सत्य यही बतलाते,  
भारत के प्राचीन मंदिर हमारे गौरव के वरदान हैं।

# सपनों का पेट, हकीकत का गिटार? कब बजेगी फिटनेस की तार?

भारतीय समाज में फिटनेस अब एक नए 'संस्कार' के रूप में लोगों के दिमाग में अच्छे से बैठ चुकी है। हर इंसान इसी राह पर चलने लगा है, जहां 'प्रोटीन शेक' को आशीर्वाद की तरह मान लिया जाता है। बढ़ा हुआ बजन कम करने वाले डाइट प्लान को किसी शास्त्र की तरह माना जाता है। लेकिन हम सब जानते हैं कि फिटनेस की इस धारणा में कुछ बातें इतनी सरल नहीं हैं जितनी कि ये सब हमें दिखती हैं।

सबसे पहले तो एक सवाल- क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर हमारा पेट बढ़ता क्यों है? जब आपके पेट पर थोड़ा सा भी बढ़ने का संकेत दिखाई देता है, तो समाज में हर व्यक्ति फिटनेस गुरु बन जाता है। पड़ोसी आंटी से लेकर ऑफिस के सहकर्मी तक, सब आपको हेल्दी डाइट प्लान और व्यायाम के सुझाव देने लगते हैं। और अगर आप जिम जाने का इरादा भी करते हैं, तो सब हौसला बढ़ाने के बजाय पूछते हैं- अरे, अब तो उम्र हो गई है! पेट तो रहना ही चाहिए।

जैसे ही हम फिटनेस के लिए जिम का दरवाजा खटखटाते हैं, हम एक दूसरी दुनिया में पहुंच जाते हैं। यहां हर चीज का मूल्य अलग होता है- आपकी टमी के चंद इंच घटाने के लिए पहले तो एक सदस्यता शुल्क देना होता है। फिर प्रोटीन शेक, फैंसी योगा मैट्स, फिटनेस डिवाइसेज यानी कि सब कुछ आपको खरीदना है। और ये सब करने के बाद भी आपका पेट जिद्दी दोस्त की तरह रहता है। आप जिम जाते रहिए, मेहनत करते रहिए और पेट उसी गर्व के साथ आपके सामने बना रहता है।

फिटनेस धर्म में 'डाइट प्लान' का महत्व किसी व्रत से कम नहीं है। आपको दिन के हिसाब से अलग-अलग चीजें खाना होता है। सोमवार को 'कीटो', मंगलवार को 'इंटरमिटेन्ट फास्टिंग', बुधवार को 'पैलियो' और हफ्ते के बाकी दिनों के लिए अलग-अलग फैंसी नामों वाले डाइट प्लान। लेकिन यह डाइट का गणित ऐसा है कि हर हफ्ते शुरू तो बड़े जोश के साथ होता है, लेकिन शुकवार आते-आते चिप्स, बर्गर और गरमागम गुलाब जामुन हमें बुलाते हुए लगते हैं। और फिर से वो हफ्ता खत्म हो जाता है। यह डाइट प्लान ठीक वैसे ही है जैसे हमारे नए साल के संकल्प जो पूरा होने का नाम नहीं लेते!

योगा का नाम सुनते ही मन में शांति की भावना आनी चाहिए। लेकिन, जब पेट थोड़ा बढ़ा हुआ हो तो वो 'शांति' की बजाय

'शर्मिंदगी' का कारण बन जाता है। योगा क्लास में आपके साथ कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो बिलकुल उस संत की तरह दिखते हैं जिनकी जिंदगी में कोई तनाव नहीं होता।

और फिर आते हैं हम- जो 'सूर्य नमस्कार' के बाद सोचते हैं कि क्या ये पेट एक इंच कम हुआ? यह क्लासेज हमारे लिए एक ऐसा यादगार अनुभव बन जाती हैं, जहां हम खुद को दुनिया के सबसे फूले हुए इंसान के रूप में देखते हैं।

आज के समय में सोशल मीडिया पर हर कोई फिटनेस एक्सपर्ट है। आपके इंस्टाग्राम पर हर तीसरे पोस्ट में एक नया फिटनेस चैलेंज दिखाई देता है। और हर दूसरे पोस्ट में आपको वही व्यक्ति दिखेगा जो कहेगा, 'अरे ये सब मेरे लिए आसान था, आपको भी कर लेना चाहिए'। हकीकत में ये पोस्ट सिर्फ हमारे आत्मसम्मान को कुचलने का एक तरीका है। यह लोगों का नया शौक है, देखो, मैं कितना फिट हूं, और तुम कितने आउट ऑफ शेप हो! हम जैसे लोग इन पोस्ट्स को देखकर बस यही सोचते हैं कि भाई, तू दिखता ही रह, हमें तो कुर्सी पे बैठ के खाना ज्यादा पसंद है।

आजकल फिटनेस बैंड्स और वॉचेस का जमाना है। यह डिवाइसेस आपकी हर गतिविधि पर नजर रखती हैं। इनका असली उद्देश्य है कि आपको यह एहसास दिलाना कि आप कितना आलसी हैं। हर 10 मिनट में ये आपको रिमाइंडर देती हैं कि 'थोड़ा चलो', 'पानी पियो', और 'गहरी सांस लो'। इन फिटनेस गैजेट्स का काम है हमारी जिंदगी में एक नया तनाव जोड़ना। अब तो हमें खुद पर हंसने का भी समय नहीं मिलता, क्योंकि घड़ी का रिमाइंडर बता रहा होता है कि अगले 100 कदम कब चलने हैं!

अंत में, इस फिटनेस और स्वास्थ्य की यात्रा का सबसे बड़ा सबक यही है कि अपने बढ़ते पेट को प्यार से स्वीकार करना। आखिरकार, हमारे जीवन का आनंद इस बात में है कि हम अपने शरीर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। फिटनेस के इस मजाकिया सफर में यह स्वीकारना जरूरी है कि थोड़ा-सा पेट होने में कोई खराबी नहीं है। यह हमें हमारी जिंदगी के मजे लेने का हक देता है।

फिटनेस धर्म में शामिल होना बुरा नहीं है, पर अपनी खुशी और पेट की थोड़ी सी जिद के बीच संतुलन बनाना भी उतना ही जरूरी है।

ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर।

बस यूंही रघुनाथ



मानसून का आगमन जहां चिलचिलाती गर्मी से राहत और चारों तरफ हरियाली लेकर आता है, वहीं यह मौसम अपने साथ कई तरह की बीमारियों और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का जोखिम भी बढ़ा देता है। मानसून में स्वास्थ्य संबंधी बिमारियों एवं सावधानियों से बरतने के लिए फिजिशियन डॉक्टर अंजू मलिक जी से विशेष बातचीत की प्रस्तुत है बातचीत के मुख्य अंश-

## मानसून में स्वास्थ्य संबंधी सावधानियाँ

मानसून के मौसम में आमतौर पर कौन-कौन सी बीमारियाँ सबसे अधिक देखने को मिलती हैं?

मानसून के मौसम में निम्न बीमारियाँ अधिकतर देखी जाती हैं-

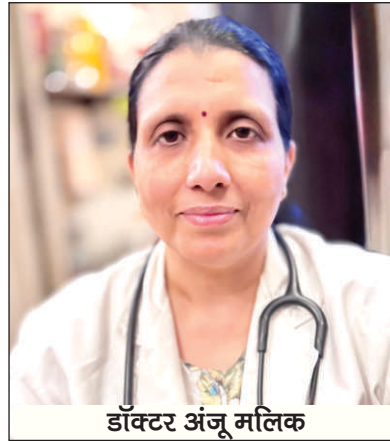
- ◆ मच्छर जनित बीमारियाँ जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया।
- ◆ दूषित पानी से होने वाली बीमारियाँ जैसे टाइफाइड, पीलिया, हैजा आदि।
- ◆ हवा से होने वाली बीमारियाँ जैसे फ्लू, वायरल बुखार, नाक कान गले के इन्फेक्शन।
- ◆ त्वचा संबंधी बीमारियाँ जैसे फंगल इन्फेक्शन।

वर्षा ऋतु में वायरल बुखार, डेंगू, मलेरिया और टाइफाइड जैसी बीमारियों से बचाव के लिए क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

वायरल बुखार एवं फ्लू से बचने के लिए- संक्रमित व्यक्ति के संपर्क से बचें, मास्क का प्रयोग करें, भीड़ में न जाएं तथा फ्लू से बचने का टीका लगवायें।

डेंगू, मलेरिया आदि मच्छर से फैलने वाली बीमारियों से बचने के

लिए- पूरी बाजू के कपड़े पहनें, आसपास के वातावरण में पानी इकठ्ठा न होने दें, मच्छर भगाने वाले उत्पादों और मच्छर-दानी का प्रयोग करें।



डॉक्टर अंजू मलिक

टाइफाइड से बचने के लिए- जल एवं खाद्य सुरक्षा अपनाएँ, उबला हुआ या फिल्टर्ड पानी का सेवन करें, साबुन से अच्छी तरह हाथ धोना, कच्चा व सड़क किनारे मिलने वाली चीजों को न खाए, फल और सब्जियों को अच्छे से धोकर खायें और टाइफाइड से बचने का टीका लगाएं।

इस मौसम में खान-पान को लेकर

लोगों को किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

मानसून के मौसम में जल एवं खाद्य सुरक्षा का खास ध्यान रखना चाहिए।, मौसम के फल और सब्जियों को भरपूर मात्रा में खाएं, इनमें विटामिन और मिनरल होते हैं जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं और संक्रमण से लड़ने में मदद करते हैं। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना भी महत्वपूर्ण है। हर्बल चाय, गर्म सूप, नींबू पानी आदि भी लाभदायक होते हैं। पानी को छानकर या उबाल कर इस्तेमाल करें तथा घर के बने पौष्टिक भोजन का सेवन करें।

क्या मानसून में बाहर का खाना और स्ट्रीट फूड खाने से बचना चाहिए? यदि हाँ, तो क्यों?

मानसून में स्ट्रीट खाने से बचें क्योंकि अधिक नमी के कारण हैजा, टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैलाने वाले बैक्टीरिया वर्षा ऋतु में 4-5 गुना तेजी से पनपते हैं और खुले में रखे हुए भोजन को संक्रमित कर सकते हैं। मानसून में मक्खियाँ और कीड़े भी अधिक तादात में होते हैं जो संक्रमण फैलाते हैं। स्ट्रीट फूड वाले स्टॉलों के पास अधिकतर स्वच्छ

पानी का स्रोत नहीं होता। इन सभी कारणों से स्ट्रीट फूड के सेवन से गंभीर फूड पॉयजनिंग, टाइफाइड और हैजा जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

**बच्चों और बुजुर्गों को मानसून में किन विशेष स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ता है?**

बच्चों और बुजुर्गों- ये दोनों ही वर्ग रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए इन्हें मानसून के मौसम में फ्लू, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, डायरिया, हैजा, टाइफाइड, डेंगू, मलेरिया आदि जैसी बीमारियों के जोखिम का सामना करना पड़ता है।

**मानसून में रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने के लिए आप क्या सुझाव देंगे?**

मानसून में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के सुझाव- संतुलित आहार, कम तेल, अधिक प्रोटीन, फल, सब्जियां, मसाले (हल्दी, अदरक), प्रोबायोटिक खाद्य पदार्थ (जैसे दही) को अपने आहार में शामिल करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पिए।

◆ नियमित शारीरिक व्यायाम : प्रति सप्ताह कम से कम 150 मिनट्स करें।

◆ पर्याप्त नींद : 6-8 घंटे की नींद आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होती है।

◆ तनावमुक्त जीवन शैली : लगातार तनाव शरीर में कोर्टिसोल की मात्रा बढ़ाता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता पर दुष्प्रभाव डालता है।

◆ टीकाकरण : फ्लू, टाइफाइड, हेपेटाइटिस-ए, निमोनिया आदि बीमारियों से बचने के लिए टीकाकरण भी महत्वपूर्ण होता है।

**इस मौसम में त्वचा संबंधी और फंगल संक्रमण क्यों बढ़ जाते हैं? उनसे बचने के क्या उपाय हैं?**

मानसून के मौसम में वातावरण में अधिक नमी या उमस होती है जिसके कारण त्वचा पर जमा होने वाला पसीना और मैल फंगस के पनपने के लिए अनुकूल परिस्थित बना देते हैं। मानसून में बादल छाए रहने से सूरज की

यू वी किरणें कम होने से फंगल संक्रमण अधिक होता है।

**मानसून में फंगस संक्रमण से बचने के उपाय :** त्वचा को सूखा रखें, गीले कपड़े तुरंत बदलें, अपने पैरों को सूखा रखें, गीले जूते और मोजे जल्द ही बदलें, व्यक्तिगत स्वच्छता बनाये रखें, इसके अलावा अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के उपायों को अपनाएं।

**बरसात में भीग जाने पर क्या करना चाहिए ताकि सर्दी-जुकाम या अन्य संक्रमणों से बचा जा सके?**

गीले कपड़े तुरंत बदल कर सूखे कपड़े पहन लें, गर्म पानी से स्नान करें, पैरों को विशेषकर अच्छी तरह साफ करें, गीले कपड़ों में पंखे या ए.सी. के आगे बैठने से बचें गर्म तरल पदार्थों जैसे हर्बल चाय, सूप आदि का सेवन करें।

**मानसून के दौरान कौन से लक्षण ऐसे हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए?**

मानसून के दौरान निम्न लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए-

यदि 2-3 दिन से अधिक बुखार हो, पेट में दर्द, लगातार उल्टी होना, तेज सांस लेना, सीने में दर्द या सांस लेने में तकलीफ होना, निर्जलता (पानी की कमी) के लक्षण जैसे - मुँह सूखना, पेशाब कम आना, चक्कर आना, शरीर पर लाल-लाल या नीले धब्बे, मसूड़ों से खून आना, नाक से खून आना- ये गंभीर डेंगू के लक्षण होते हैं।

**मधुमेह, उच्च रक्तचाप और थायरॉइड जैसी पुरानी बीमारियों से पीड़ित लोगों को मानसून में क्या अतिरिक्त सावधानियाँ बरतनी चाहिए?**

मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हाइपोथायरायडिज्म के रोगियों को निम्न अतिरिक्त सावधानियाँ बरतनी चाहिये-

स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए, अपने स्वास्थ्य संकेतों (जैसे ब्लड शुगर, बी.पी.) की नियमित रूप से जाँच करते रहना चाहिए, यह भी सुनिश्चित करें कि दवाईयाँ नमी के कारण खराब न हों, फ्लू, निमोनिया,

टाइफाइड, हेपेटाइटिस जैसी बीमारियों के लिए टीकाकरण करवायें।

**क्या मानसून में मानसिक स्वास्थ्य पर भी कोई प्रभाव पड़ता है? यदि हाँ, तो उससे कैसे निपटा जा सकता है?**

भारी बारिश जैसी प्रतिकूल मौसम की स्थिति बाहरी गतिविधियों और सामाजिक मेलझोल को सीमित कर सकती है जिससे अलगाव और अकेलेपन की भावना पैदा हो सकती है। इससे निपटने के लिए घर के अंदर आरामदायक माहौल बनाना और माइंडफुलनेस का अभ्यास मददगार होता है।

रचनात्मक गतिविधियों जैसे संगीत, पेंटिंग, हस्तकला, नृत्य आदि में शामिल होना भी मन को प्रसन्न रखने में सहायक होता है। सामाजिक संपर्क (भले ही वर्चुअल ही क्यों न हो) बनाये रखना भी मददगार होता है।

योग, डांस जैसे इंडोर व्यायाम भी मनोदशा को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं, जरूरत पड़ने पर एक्सपर्ट साइकोलॉजिस्ट से परामर्श लेना भी प्रभावी होता है।

**अंत में, आप हमारे पाठकों के लिए मानसून में स्वस्थ रहने के पाँच सबसे महत्वपूर्ण सुझाव क्या देना चाहेंगे?**

मानसून में स्वस्थ रहने के लिए मैं पाठकों को ये पाँच महत्वपूर्ण सुझाव देना चाहूँगी-

◆ स्वच्छ और सुरक्षित पानी का ही सेवन करें तथा भोजन की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।

◆ मच्छरों से बचाव करें, घर और आसपास पानी जमा न होने दें तथा मच्छरदानी या रिपेलेंट का उपयोग करें।

◆ संतुलित एवं पौष्टिक आहार लें, पर्याप्त पानी पिएं और नियमित व्यायाम व पर्याप्त नींद को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

◆ बुखार, उल्टी, दस्त, सांस लेने में तकलीफ या शरीर पर चकते जैसे लक्षणों को नजरअंदाज न करें और समय पर चिकित्सकीय परामर्श लें।

याद रखें, अधिकांश मानसूनी बीमारियों से बचाव संभव है। थोड़ी-सी सावधानी, स्वच्छता और जागरूकता आपको और आपके परिवार को पूरे मौसम में स्वस्थ और सुरक्षित रख सकती है।

# कृषि, प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण और लोक पर्वों का जुलाई



नीलम भागी

लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

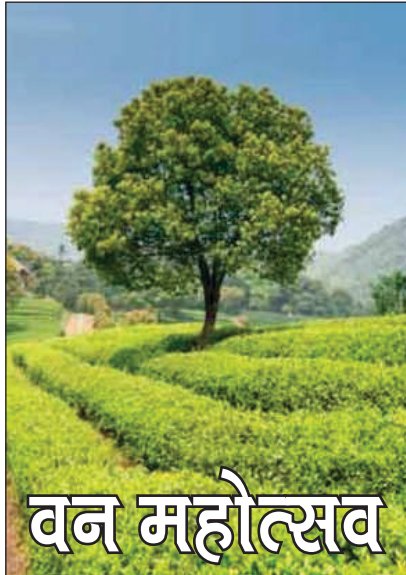
**क**हीं पढ़ा था कि पेड़ों के लिए काम करना, मां प्रकृति की पूजा करना है। आषाढ़ मास में वर्षा का आगमन होता है इसलिए इसे किसानों के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं तो वृक्षारोपण की शुरुवात करते हैं। इसलिए 1950 से जुलाई के पहले सप्ताह में सरकार देशभर में 'वन महोत्सव' (पेड़ों का त्योहार) का आयोजन करती है। वनों का महत्व सामान्य लोगों को समझाना मकसद होता है। बच्चों से 'वनों के लाभ' पर निबंध लिखवाना या वाद विवाद प्रतियोगिता करवाना ही काफी नहीं है। उन्हें पेड़ों को बचाना, उनका संरक्षण करना भी सिखाना है।

दश कूप सम वापी, दश वापी समोहदः।

दशहृदसमः पुत्रो, दशपुत्रसमो द्रुमः।

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। मत्स्य पुराण का यह कथन हमें पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमारे यहां किसी राजा की महानता का वर्णन करते हैं तो लिखते हैं कि उसने अपने शासन काल में सड़के बनवाई थीं और उसके दोनो ओर घने छायादार वृक्ष लगवाए थे। हमारे यहां तो पेड़ों की पूजा की जाती है। अब हमें

हरियाली बढ़ाने के लिए ग्रीन स्टेप्स लेने होंगे। सभी के थोड़े थोड़े योगदान से बहुत बड़ा परिवर्तन हो जायेगा। बच्चों को बचपन से ही पर्यावरण से जोड़ना होगा। त्री उत्सव (2से 5 जु.) अरुणाचल प्रदेश की अपातानी जनजाति का एक प्रमुख कृषि पर्व है, जो मुख्य रूप से जीरो घाटी में हर साल मनाया जाता है। यह बेहतर फसल और समुदाय की भलाई के लिए देवताओं की पूजा (जैसे तामू, हरनियांग) के साथ मनाया जाता है। जैन धर्म में अष्टाहिका महापर्व व्रत आषाढ़ मास



## वन महोत्सव

में शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा (8 दिनों तक) तक मनाया जाता है। आषाढ़ अष्टाहिका (नंदीश्वर) जुलाई जिसका समापन 12 जुलाई 2026 (रविवार) को होगा। वहीं विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 28 जुलाई को मनाया जाता है। प्राकृतिक संसाधनों के बहुत अधिक दोहन के कारण पर्यावरण को बनाए रखने की जरूरत बहुत अधिक हो गई है।

चंपाकुलम नौका दौड़ (6 जु.) यह केरल की सबसे पुरानी और सबसे लोकप्रिय पारंपरिक नौका दौड़ है, जो अलापुझा के चंपाकुलम नदी में आयोजित होती है।

महाराष्ट्र की प्रसिद्ध पंढरपुर वारी (पालकी उत्सव) 8 जु. (आळंदी से) 8 जु. को संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालकी का प्रस्थान होगा और 7 जु. (देहू से) को संत तुकाराम महाराज की पालकी का प्रस्थान होगा। यह लगभग 21 दिनों तक चलने वाला पैदल उत्सव है, जो 25 जुलाई 2026 को 'आषाढी एकादशी' के मुख्य दिन पंढरपुर में संपन्न होगा। इस उत्सव में वारकरी संप्रदाय के लाखों श्रद्धालु पैदल चलकर आषाढी एकादशी के अवसर पर पंढरपुर पहुंचते हैं। इसी प्रकार बेहदी नखलम महोत्सव (11से 14जु.) 3 दिन तक चलने वाला स्थान, जोवाई जयंतिया हिल्स मेघालय का त्योहार है। फसल बोने के बाद भगवान से अच्छी वर्षा, समृद्ध फसल के लिए प्रार्थना की जाती है। भगवान को बुलाने के लिए पारंपरिक पोशाक में सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं। यह पनार (जयंतिया) जनजाति का सबसे महत्वपूर्ण रंग-बिरंगा त्योहार है, जो बीमारी और बुरी आत्माओं को दूर भगाने और अच्छी फसल की कामना के लिए मनाया जाता है। अंतिम दिन 14 जु. को फुटबल मैच खेला जाता है। ऐसा मानना है कि विजेताओं की समृद्ध फसल पैदा होगी। आदि अमावस्या (14 जु) दक्षिण भारतीय (विशेषकर तमिल) संस्कृति में पितरों के तर्पण और श्राद्ध के लिए यह दिन बेहद पवित्र माना जाता है। हरेला उत्सव 16 जु. उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों (जैसे शिमला और सिरमौर में हरियाली के रूप में) भी मनाया जाता है। जो मानसून और हरियाली के स्वागत के लिए मनाया जाएगा। यह त्योहार प्रकृति, कृषि और पर्यावरण संरक्षण को समर्पित है, जहाँ लोग समृद्धि के प्रतीक के रूप में पौधों को रोपते हैं और भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा करते हैं। त्योहार से 9-10 दिन पहले, घर के मुखिया द्वारा 5 या 7 प्रकार के बीजों (जैसे गेंहू, मक्का, जौ) को मिट्टी की

टोकरियों या गमलों में बोया जाता है। अब हरेला एक बहुत बड़े पर्यावरण जागरूकता अभियान में बदल गया है, जिसमें राज्य भर में बड़े पैमाने पर पौधे लगाए जाते हैं। पुरी का 12 दिवसीय प्रधान पर्व होते हुए भी रथोत्सव पर्व भारत में लगभग सभी नगरों में श्रद्धा और प्रेम के साथ मनाया जाता है। आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन भगवान जगन्नाथ की यात्रा प्रारंभ होती है। भगवान जगन्नाथ की यात्रा में भगवान श्री कृष्ण, सुभद्रा और बलराम की पुष्य नक्षत्र में रथ यात्रा निकाली जाती है। रथयात्रा बहन सुभद्रा के भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण और बलराम ने अलग रथों में बैठ कर करवाई थी। सुभद्रा जी की नगर भ्रमण की याद में यह रथयात्रा पुरी में हर वर्ष होती है। जिनके मन में भगवान के दर्शन करने की लालसा है। वे रथ यात्रा में जाकर मंदिर से बाहर भगवान के दर्शन कर सकते हैं।

आषाढ़ में मानसून आ जाता है। तेलंगाना का राज्य लोक महोत्सव बोनालु (19 जु. से 9 अगस्त) हैदराबाद, सिकंदराबाद, तेलंगाना के अलावा भारत के कई अन्य हिस्सों में आषाढ़ के एक महीने तक बहुत श्रद्धा से मनाया जाता है। इसमें आषाढ़ के प्रत्येक रविवार महाकाली के मंदिर से बाजे गाजे के साथ जलूस निकलता है। त्योहार के पहले और अंतिम दिन देवी येलम्मा के लिए विशेष पूजाएं की जाती हैं। मन्त पूर्ति पर तो देवी को धन्यवाद के लिए बहुत जोर शोर से मनाया जाता है। 200 साल से बोनालु पारंपरिक लोक उत्सव की शुरुआत हुई थी। श्रद्धालुओं का मानना है कि एक बार प्लेग फैला था, जिसका कारण देवी का रुष्ट होना है। उसके बाद से बोनालु में देवी को अच्छी फसल के लिए धन्यवाद करते हैं। अच्छी वर्षा और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं। वर्षा के कारण होने वाले संक्रमण से बचाने की प्रार्थना करते हैं। बोनालु के दौरान महिलाएं महाकाली को चावल, दूध और गुड़ से बने विशेष पकवान

(बोनाम) अर्पित करती हैं।

देवशयनी एकादशी, थोली एकादशी, हरिशयनी एकादशी 25 जुलाई को है। इस दिन से सभी प्रकार के मांगलिक कार्यक्रम, विवाह आदि नहीं किए जाते हैं। मान्यताओं के अनुसार इसी दिन से भगवान विष्णु 4 महीनों के लिए योग निद्रा में जाते हैं। चौमासा शुरु हो जाता है और देवी देवता विश्राम को चले जाते हैं। इस अवधि में अत्यधिक वर्षा के कारण संत समाज एक ही स्थान पर रुक कर व्रत, ध्यान और तप करते हैं। यह पर्व दुनियाभर में रहने वाले तेलुगु भाषियों द्वारा धूमधाम से मनाया जाता है। यह एकादशी विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ यात्रा के बाद आती है। जो किसान समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे इस दिन पहली बारिश के बाद बीज बोना शुरू करते हैं। इस दिन भव्य भोज का आयोजन किया जाता है। 26 जुलाई से हिमाचल के चंबा जिले में सावन की रिमझिम फुहारों के बीच में मिंजर मेले का आयोजन किया जाता है। सात दिन तक चलने वाले इस मेले में लगता है, जैसे पुराने ज़माने में आ गए हों। महिलाएं पुरुष पारंपरिक पोशाकों में अपने लोक नृत्य करते हैं। फसल उत्सव है। गेहूँ, धान, मक्की और जौ की बालियों को स्थानीय भाषा में मिंजर कहते हैं। इस मेले में सबसे पहले भगवान लक्ष्मीनारायण को मिंजर अर्पित की जाती है। उसके बाद अखंड चंडी महल में भगवान रघुवीर को इसे चढ़ाया जाता है। ऐतिहासिक चौगान में ध्वज चढ़ाने के बाद मिंजर का आगाज होता है। आजकल जरी गोटे से मिंजर बना कर कमीज के बटन पर टांगते हैं। जिसे दो हफ्ते के बाद रावी नदी में प्रवाहित कर देते हैं। इस मेले में पूरे हिमाचल की बहुरंगी संस्कृति देखने को मिलती है।

गुरु पूर्णिमा 29 जुलाई को भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दूओं और बौद्धों द्वारा अपने गुरुओं को कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। यह आध्यात्मिक और अकादमिक

गुरुजनों को समर्पित परम्परा है। तुलसीदास जी रामचरित मानस में लिखते हैं

गुरु बिन भवनिधि तरे न कोई,  
जो बिरंचि संकर सम होई॥

अर्थात् कोई स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के समान ही क्यों न बन जाए। बिना गुरु के उद्धार नहीं हो सकता। यही कारण है कि पूर्णावतार श्री राम, कृष्ण ने भी गुरु बनाए थे। अतः ऐसे गुरु की तलाश में रहना चाहिए जो हमारे अवगुणों को दूर करने में हमारी मदद करे। इस दिन अपने गुरु को यथासम्भव दक्षिणा देते हैं। सेवा आदि से उन्हें प्रसन्न करते हैं। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। गुरु वेदव्यास ने वेदों को लिखा, जिसे ब्रह्मा ने पढ़ा। उन्होंने पुराण भी लिखे। यह भी माना जाता है कि उन्होंने इस दिन ब्रह्म सूत्रों को पूरा किया। उनके जन्म दिन पर उसी दिन से एक दिन गुरुओं को समर्पित है। गुरु या शिक्षक वह होता है जो हमारे जीवन में मार्गदर्शक की तरह काम करता है। आध्यात्मिक गुरुओं और शिक्षकों को सम्मान देने का यह पवित्र दिन दक्षिण भारत के विभिन्न आश्रमों और मंदिरों में बहुत श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। जो इस दिन गुरु के पास नहीं जा सकते, वे अपने घर में ही गुरु की पूजा करते हैं। 30 जुलाई से श्रावण मास शुरू है। इसमें भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्व है। सावन में धरती हरियाली से ढक जाती है। नई बहू को पहले सावन में मैके भेज दिया जाता है। रिवाज़ है कि शादी के बाद, पहला सावन सास बहू इकट्ठे नहीं रहतीं हैं। दक्षिण भारत में पहला आषाढ़ सास बहू एक साथ नहीं रहतीं हैं। हमारे लोकगीतों में भी हरियाली, सावन के झूले, रिमझिम वर्षा की फुहारों में झूलती गाती सखियां होती हैं।

हमारे उत्सव हमें बताते हैं कि प्रकृति का महत्व हमारे जीवन के हर रंग में है। आइये हम सभी इन उत्सवों की मूल भावना को आत्मसात कर अपने जीवन को समृद्ध और समाज को सशक्त बनाने का संकल्प लें।

# तकनीक से सुरक्षित सफर छात्रों ने तैयार किया आधुनिक स्मार्ट हेलमेट



आगरा, उत्तर प्रदेश : युवा सोच और तकनीक का संगम समाज की कई समस्याओं का समाधान बन सकता है। जब छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है, तो वे ऐसे नवाचार करते हैं जो लोगों की सुरक्षा और जीवन को बेहतर बनाने में मददगार सिद्ध होते हैं। उत्तर प्रदेश के आगरा में इंजीनियरिंग के छात्रों ने ऐसा ही एक अनोखा और सराहनीय आविष्कार किया है।

जी हां, आगरा कॉलेज के इंजीनियरिंग विभाग के छात्रों ने एक विशेष स्मार्ट हेलमेट तैयार किया है, जिसका नाम “ब्लैक नोयर द स्मार्ट हेलमेट” रखा गया है। बीटेक अंतिम वर्ष के छात्र यश उप्रेती, आयुष

शर्मा और संजना चौहान ने करीब चार महीने की मेहनत से इस हेलमेट को विकसित किया है।

इस स्मार्ट हेलमेट में कई आधुनिक और उपयोगी सुविधाएं दी गई हैं। सबसे अहम बात यह है कि हेलमेट पहने बिना बाइक स्टार्ट नहीं होगी। इसके अलावा इसमें अल्कोहल डिटेक्शन सिस्टम लगाया गया है, जिससे यदि चालक ने शराब पी रखी हो तो बाइक स्टार्ट नहीं होगी। हेलमेट में एक विशेष सेंसर भी लगाया गया है, जो दुर्घटना होने पर तुरंत परिजनों को लाइव लोकेशन के साथ आपातकालीन संदेश भेज सकता है। साथ ही इसमें हैंड्स-फ्री कॉलिंग की सुविधा भी है, जिससे बाइक चलते समय बिना मोबाइल हाथ में लिए बातचीत की जा सकती है।

छात्रों ने इस प्रोजेक्ट की शुरुआत फरवरी 2026 में की थी और मई 2026 तक इसे तैयार कर लिया। फिलहाल इसे बनाने में लगभग 8 हजार रुपये की लागत आई है।

यह आविष्कार दिखाता है कि देश के युवा केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अपनी प्रतिभा और तकनीकी ज्ञान के दम पर समाज की समस्याओं का समाधान भी खोज रहे हैं। ऐसे नवाचार भारत को सुरक्षित, आधुनिक और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

## बंजर जमीन पर उगी सफलता की फसल

बागेश्वर, उत्तराखण्ड : आज स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं अपनी मेहनत और सामूहिक प्रयासों के बल पर आत्मनिर्भरता की नई मिसालें कायम कर रही हैं। वे न केवल अपनी आय बढ़ा रही हैं, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी सकारात्मक कार्य कर रही हैं। उत्तराखण्ड के बागेश्वर जिले में महिलाओं के एक समूह ने ऐसा ही प्रेरणादायक कदम उठाकर बंजर जमीन को हरे-भरे किचन गार्डन में बदल दिया है। बता दें, बागेश्वर विकास भवन परिसर में संचालित नमन स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने कैटीन के पास लंबे समय से खाली पड़ी जमीन को खेती योग्य बनाकर उसमें विभिन्न प्रकार की जैविक सब्जियां उगानी शुरू की हैं। इन सब्जियों का उपयोग सीधे कैटीन में बनने वाले भोजन में किया जा रहा है, जिससे लोगों को ताजा, पौष्टिक और रसायन मुक्त भोजन मिल रहा है। कैटीन संचालक सुनीता टम्टा ने बताया कि उनका उद्देश्य केवल आमदनी बढ़ाना नहीं था, बल्कि लोगों को स्वस्थ भोजन उपलब्ध कराना भी था। इसी सोच के साथ समूह की महिलाओं ने छुट्टी के दिनों में मिलकर खेत की सफाई की, झाड़ियां हटाईं और जमीन को खेती के लिए तैयार किया। उनकी मेहनत का परिणाम यह हुआ कि बंजर जमीन आज एक सुंदर और हरे-भरे किचन गार्डन में बदल चुकी है। वर्तमान में इस गार्डन में बींस, शिमला मिर्च, अदरक, चौलाई, मूली, भिंडी और चुकंदर सहित कई प्रकार की सब्जियां उगाई जा रही हैं। इन ताजी सब्जियों से तैयार भोजन का स्वाद और गुणवत्ता दोनों बेहतर हुई हैं। कैटीन में आने वाले कर्मचारी और अन्य ग्राहक भी इस पहल की सराहना कर रहे हैं। किचन गार्डन का एक बड़ा लाभ यह भी है कि अब कैटीन के लिए बाजार से सब्जियां खरीदने की आवश्यकता काफी कम हो गई है। इससे खर्च में बचत हो रही है और समूह की महिलाओं की आय में भी बढ़ोतरी हो रही है।



## कीवी खेती से बढ़ी आमदनी, ग्रामीण महिलाओं को भी मिला रोजगार



बागेश्वर, उत्तराखण्ड : पहाड़ों में अब किसान पारंपरिक खेती के साथ नई और लाभकारी फसलों की ओर भी बढ़ रहे हैं। उत्तराखण्ड के बागेश्वर जिले में कीवी की खेती किसानों के लिए आय का अच्छा माध्यम बनकर उभर रही है। इसकी शुरुआत जिले में सबसे पहले शामा क्षेत्र के पूर्व शिक्षक भवान सिंह कोरंगा ने की थी। उनकी सफलता से प्रेरित होकर अब कई किसान कीवी उत्पादन अपना रहे हैं। इसी क्रम में कौसानी क्षेत्र की तुलसी कठायत भी कीवी की खेती से अच्छी कमाई कर रही हैं और अन्य महिलाओं को रोजगार देने का काम कर रही हैं।

बता दें, तुलसी कठायत ने अपने बगीचे में मेल और फीमेल दोनों प्रकार के कीवी पौधे लगाए हैं। उनका कहना है कि बेहतर उत्पादन के लिए दोनों पौधों का संतुलन जरूरी होता है। फीमेल पौधों में फल लगते हैं, जबकि मेल पौधे परागण में मदद करते हैं। सही परागण से फलों की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों बेहतर होते हैं।

तुलसी बताती हैं कि शुरुआत में लोगों को कीवी की खेती की ज्यादा जानकारी नहीं थी, लेकिन अब इसकी बढ़ती मांग और अच्छे दाम मिलने से किसान इसमें रुचि दिखा रहे हैं। पौधों की देखभाल में मेहनत जरूर लगती है, लेकिन एक बार तैयार होने के बाद कई वर्षों तक अच्छी पैदावार मिलती रहती है।

उनके बगीचे में हर साल अच्छी मात्रा में कीवी का उत्पादन होता है। स्थानीय बाजार के साथ-साथ बाहरी क्षेत्रों से भी उनके फलों की मांग रहती है। इससे उन्हें एक सीजन में लाखों रुपये की आय प्राप्त हो रही है, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

कीवी बगीचे में निराई-गुड़ाई, तुड़ाई और अन्य कार्यों के लिए स्थानीय महिलाओं को भी रोजगार मिलता है। इससे महिलाओं की आय बढ़ रही है और वे आत्मनिर्भर बन रही हैं। तुलसी का मानना है कि यदि किसानों को उचित प्रशिक्षण और तकनीकी जानकारी मिले तो पहाड़ी क्षेत्रों में कीवी उत्पादन स्वरोजगार का बड़ा साधन बन सकता है।

## 'कैरी मी बैक' से बदल रही तस्वीर, स्वच्छ और सुंदर बन रहा केदारनाथ धाम

रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड : हिमालय की वादियों में बसे चारधाम अपनी दिव्यता, प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। इन पवित्र धामों की स्वच्छता और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सराहनीय प्रयास कर रहे हैं। इन्हीं प्रयासों का सकारात्मक परिणाम है कि चारधाम क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण और कूड़ा प्रबंधन को लेकर जागरूकता लगातार बढ़ रही है। जी हां, केदारनाथ धाम में रुद्रप्रयाग जिला प्रशासन की ओर से "कैरी मी बैक" अभियान चलाया जा रहा है।

इस पहल का उद्देश्य यात्रियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना और धाम क्षेत्र को कचरामुक्त बनाए रखना है। अभियान के तहत श्रद्धालुओं से अपील की जा रही है कि वे अपने साथ ले जाए गए प्लास्टिक, पानी की खाली बोतलें, खाद्य सामग्री के रैपर और अन्य गैर-जैविक कचरे को धाम में न छोड़ें, बल्कि वापस गौरीकुंड तक लेकर आएंगे। वहीं बदरीनाथ धाम में कूड़ा प्रबंधन को आधुनिक तकनीक से जोड़ा गया है। यहां यात्रा सीजन में निकलने वाले कचरे को गीले और सूखे कचरे में अलग किया जाता है। गीले कचरे से जैविक खाद तैयार की जा रही है, जबकि प्लास्टिक कचरे को प्रोसेस कर उपयोगी ब्लॉक बनाए जा रहे हैं। इससे न केवल स्वच्छता को बढ़ावा मिल रहा है, बल्कि संसाधनों का बेहतर उपयोग भी हो रहा है।

चारधाम में चल रही ये पहलें दिखाती हैं कि जब प्रशासन और



आम लोग मिलकर किसी अच्छे उद्देश्य के लिए कार्य करते हैं, तो सकारात्मक बदलाव संभव हो जाता है। पर्यावरण संरक्षण के ये प्रयास न केवल धामों को स्वच्छ बना रहे हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकृति की इस अनमोल धरोहर को सुरक्षित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रकृति हमें बहुत कुछ देती है, इसलिए उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। यदि हर व्यक्ति स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को अपनी जिम्मेदारी समझे, तो हम न केवल अपने आसपास के वातावरण को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी एक स्वच्छ और सुंदर भविष्य दे सकते हैं।

# भारतीयता के सेतुबंध बालेश्वर अग्रवाल



भारतीय पत्र जगत में नये युग के प्रवर्तक श्री बालेश्वर अग्रवाल का जन्म 17 जुलाई, 1921 को उड़ीसा के बालासोर (बालेश्वर) में जेल अधीक्षक श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल एवं श्रीमती प्रभादेवी के घर में हुआ था।

बिहार में हजारीबाग से इंटर उत्तीर्ण कर उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.एस-सी. (इंजिनियरिंग) की उपाधि ली तथा डालमिया नगर की रोहतास इंडस्ट्री में काम करने लगे। यद्यपि छात्र जीवन में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आकर वे अविवाहित रहकर देशसेवा का व्रत अपना चुके थे।

1948 में संघ पर प्रतिबंध लगने पर उन्हें गिरफ्तार कर पहले आरा और फिर हजारीबाग जेल में रखा गया। छह महीने बाद रिहा होकर वे काम पर गये ही थे कि सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया। अतः वे भूमिगत होकर संघर्ष

करने लगे। उन्हें पटना से प्रकाशित 'प्रवर्तक पत्र' के सम्पादन का काम दिया गया।

बालेश्वर जी की रुचि पत्रकारिता में थी। स्वाधीनता के बाद भी इस क्षेत्र में अंग्रेजी के हावी होने से वे बहुत दुखी थे। भारतीय भाषाओं के पत्र अंग्रेजी समाचारों का अनुवाद कर उन्हें ही छाप देते थे। ऐसे में संघ के प्रयास से 1951 में भारतीय भाषाओं में समाचार देने वाली 'हिन्दुस्थान समाचार' नामक संवाद संस्था का जन्म हुआ। दादा साहब आष्टे और नारायण राव तर्ते जैसे वरिष्ठ प्रचारकों के साथ बालेश्वर जी भी प्रारम्भ से ही उससे जुड़ गये।

इससे भारतीय पत्रों में केवल अनुवाद कार्य तक सीमित संवाददाता अब मौलिक लेखन, सम्पादन तथा समाचार संकलन में समय लगाने लगे। इस प्रकार हर भाषा में काम करने वाली पत्रकारों की नयी पीढ़ी तैयार हुई। 'हिन्दुस्थान समाचार' को व्यापारिक संस्था की बजाय 'सहकारी संस्था' बनाया गया, जिससे यह देशी या विदेशी पूंजी के दबाव से मुक्त होकर काम कर सके।

उन दिनों सभी पत्रों के कार्यालयों में अंग्रेजी के ही दूरमुद्रक (टेलीप्रिंटर) होते थे। बालेश्वर जी के प्रयास से नागरी लिपि के दूरमुद्रक का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। तत्कालीन संचार मंत्री श्री जगजीवन राम ने दिल्ली में तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने पटना में इसका एक साथ उद्घाटन किया। भारतीय समाचार जगत में यह एक क्रांतिकारी कदम था, जिसके दूरगामी परिणाम हुए।

आपातकाल में इंदिरा गांधी ने 'हिन्दुस्थान समाचार' पर ताले डलवा दिये। पर बालेश्वर जी शान्त नहीं बैठे। भारत-नेपाल मैत्री संघ, अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद तथा अन्तरराष्ट्रीय सहयोग न्यास आदि के माध्यम से वे विदेशस्थ भारतीयों से सम्पर्क में लग गये। कालान्तर में बालेश्वर जी तथा ये सभी संस्थाएं प्रवासी भारतीयों और भारत के बीच एक मजबूत सेतु बन गयी।

वर्ष 1998 में उन्होंने विदेशों में बसे भारतवंशी सांसदों का तथा 2000 में 'प्रवासी भारतीय सम्मेलन' किया। प्रतिवर्ष नौ जनवरी को मनाये जाने वाले 'प्रवासी दिवस' की कल्पना भी उनकी ही ही थी। प्रवासियों की सुविधा के लिए उन्होंने दिल्ली में 'प्रवासी भवन' बनवाया। वे विदेशस्थ भारतवासियों के संगठन और कल्याण में सक्रिय लोगों को सम्मानित भी करते थे। जिन देशों में भारतीय मूल के लोगों की बहुलता है, वहां उन्हें भारतीय राजदूत से भी अधिक सम्मान मिलता था। कई राज्याध्यक्ष उन्हें अपने परिवार का ही सदस्य मानते थे।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के प्रतिरूप बालेश्वर जी का न निजी परिवार था और न घर। अनुशासन और समयपालन के प्रति वे सदा सजग रहते थे। देश और विदेश की अनेक संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया था। जीवन का अधिकांश समय प्रवास में बिताने के बाद वृद्धावस्था में वे 'प्रवासी भवन' में ही रहते हुए विदेशस्थ भारतीयों के हितचिंतन में लगे रहे। 23 मई, 2013 को 92 वर्ष की आयु में भारतीयता के सेतुबंध का यह महत्वपूर्ण स्तम्भ टूट गया।

**SURYA**

# हर पल बढ़ती ज़िंदगी के साथ

घर हो या ऑफिस, बड़े प्रोजेक्ट से लेकर सार्वजनिक जगहों तक, सूर्या के प्रोडक्ट्स आज हर किसी की ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हमारे प्रोडक्ट्स की बड़ी रेंज व्यवसाय को बेहतर चलाने एवं शहरों के विकास में मुख्य रूप से अपनी भूमिका निभा रही है। व्यावहारिक, भरोसेमंद और विश्वसनीय, सूर्या बदलती दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है।

**SURYA  
HAI TOH  
BHAROSA  
HAI**

Lighting | Wires and Cables | Professional Lighting | Fans | Appliances | Water Pumps | PVC and Water Tanks | Steel Pipes

*I am* **SURYA****50** YEARS OF TRUSTSURYA ROSHNI LIMITED | [consumercare@surya.in](mailto:consumercare@surya.in) | [www.surya.co.in](http://www.surya.co.in) | TOLL FREE  
1800 102 5657